International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 77-104

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 77-104
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-12-2022
Accepted: 18-01-2023

Pabitro Barman
Research Scholar,
Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

Corresponding Author:
Pabitro Barman
Research Scholar,
Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

पश्चिम बंगाल की आधुनिक संस्कृत साहित्य में नाट्य (दृश्यकाव्य) विकास यात्रा

Pabitro Barman

सारांश:
पश्चिम बंगाल की साहित्य सृजन व संस्कृत तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य की विकास यात्रा पर सर्वदा उर्वर रही है। पश्चिम बंगाल में संस्कृत साहित्य की अनेक विधाओं में परिवर्तन व परिवर्धन होते रहे हैं उसी प्रकार नाट्य लेखन में अनेक परिवर्तन हुए। लोकवृत्त व लोकरुचि के अनुसार रङ्गमञ्चीय विधा नाटक में भी समय-समय पर रङ्गमञ्च व तकनीक की दृष्टि से युगानुरूप अनेक परिवर्धन दिखायी दे रहे हैं। पश्चिम बंगाल में बहु वर्षों से नाट्य तथा दृश्यकाव्य लिखी गई है। आधुनिक काल का संस्कृत नाट्य साहित्य, जिसमें रूपक के भेद नाटक, प्रहसन आदि काव्य-रूप समाहित हैं, का प्रभूत मात्रा में निर्माण हुआ। इसमें एक ओर रामायण, महाभारत आदि उपजीव्य महनीय रचनाओं से सम्बद्ध कथानकों पर आधारित रूपक लिखे गये तो दूसरी ओर अनेकों लेखकों ने स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन और बल देने के लिए भारत के विभिन्न महापुरुषों, वीरों के चरित को आधार बनाया। अधिकतर ऐसी भी रचनायें प्रकाश में आयीं जिनमें पूर्व रचनाओं शाकुन्तल आदि का पिष्टपेषण सा हुआ। फिर भी अनेक रचना ऐसी प्रकाशित हुईं, जिनमें इस क्षेत्र में एक नया ही प्रयोग लक्षित हुआ।

कूटशब्द: नाट्य विकास, वैचित्र्यपूर्ण कथावस्तु, वहुरुपक समावेश, समसामयिक विषय, नई शैली।

प्रस्तावना

हरिदास सिद्धान्तवागीश - महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश के पुरा नाम हरिदास भट्टाचार्य। हरिदास सिद्धांतवागीश 20वीं शताब्दी मूर्धन्य नाटककार हैं। हरिदास जी के जनम 1876 ई. 22 अक्टूबर अविभक्त वांला फरीदपुर जिले के कोटालिपारा उनशिया गांव में हुआ था। हरिदास जी महान आचार्य मधुसूदन सरस्वती के वंशज हैं।

उनके दादाजी काशिचन्द्र बचस्पति और पिताजी गङ्गाधर विद्यालङ्कार भी संस्कृत के विद्वान थे। वह पश्चिम वैदिक ब्राह्मण थे।

हरिदास जी ने पहले आपने पिताजी और दादाजी के साथ व्याकरण का अध्ययन किया और स्वग्राम की आर्य शिक्षा समिति की व्याकरण परीक्षा में हरिदास जी के उपलब्धि और ज्ञान के लिए "शब्दाचार्य" उपाधि से सम्मानित किया गया। उसके बाद हरिदास जी फरीदपुर के आनन्दचन्द्र विद्यारत्न और कलकत्ता के जीवनानन्द विद्यासागर महाशय से कविता, व्याकरण, स्मृति शास्त्र, पुराण, ज्योतिषादि का अध्ययन किया है और इस विषयों में यथायथरुपे विभिन्न परीक्षाओं को सफलतापूर्वकोत्तीर्ण के हरिदासजी को "व्याकरणतीर्थ", "काव्यतीर्थ" प्रभृति उपाधियाँ मिलीं। तदनन्तरं उन्हें ढाका के पूर्वी बङ्गाल सारस्वत समाज द्वारा "सांख्यरत्न","पुराणाशास्त्री", और "सिद्धान्तवागीश", उपाधियों से सम्मानित किया गया। इस लिए हरिदासजी के नाम के साथ सिद्धान्तवागीश उपाधि प्राप्त हुआ। 1960 में भारत सरकार हरिदासजी को 'पद्मभूषण' से सन्मान किया। तद्भिन्न 'भारताचार्य्य', 'रवीन्द्र-पुरस्कार' लाभ किया। अन्तिम में 1961 ई. 26 डिसेम्वर स्वर्गप्राप्ति हुआ।

हरिदास सिद्धान्तवागीश के नाट्यकृति -

वङ्गीयप्रतापम्(1918), शिवाजीचरितम् (1945), मिवारप्रतापम्, प्रतापादित्य चरित्र, विराज सरोजनी (1899), कंसवधम्, जानकीविक्रमम्।

शिवाजीचरितम्- शिवाजीचरित दस अंकों का नाटक है। यहा छत्रपति शिवाजी के संघर्षों तथा उनके द्वारा महाराष्ट्र राज्य की स्थापना की कथा है। इसको कवि ने 1945 ई. में रचा। शिवाजीचरित की प्रस्तावना में कहा गया है कि देश प्रेम की आग जलाने के लिए इस नाटक का अभिनय किया जा रहा है - "येन साम्प्रतं सर्व एव स्वाधीनतां कामयते, वयं च तदुद्दीपनमेव कञ्चित् प्रबन्धमभिनेतुमभिप्रेमः।"

नाटक के प्रथम अङ्क का आरम्भ शिवाजी के विद्यार्थी जीवन से होता है जिसमें वे अपने साथी गोविन्द के साथ हिन्दुओं के गौरव की रक्षा और उनके उद्धार की योजना बनाते हैं। द्वितीय अङ्क में तोरण दुर्ग की विजय। तृतीय अङ्क में बीजापुर के सुल्तान नादिर द्वारा शिवाजी के पिता साहनाथ की कैद। चतुर्थ अङ्क में शिवाजी द्वारा सेनापति अफजल खा का वध। पञ्चम अङ्क में नादिरशाह शिवाजी के ऊपर दमन के कुचक्र चलाता है। षष्ठ अङ्क में शिवाजी सायस्ता खान की सेना को परास्त करते हैं, इसके अनन्तर विष्कम्भक में मुगल साम्राज्य के सेनापति जयसिंह का दक्षिण प्रयाण और शिवाजी से सन्धिकर उनको छत्रपति की उपाधि देना। सप्तम अङ्क में शिवाजी का दिल्ली प्रस्थान, दिल्ली दरबार में शिवाजी का अपमान, उनको बन्दी बनाया जाना। अष्टम अङ्क में शिवाजी का गृहबन्दी में बीमारी का बहाना तथा मिठाई की टोकरी में बैठकर गृहबन्दी से निकल जाना। शिवाजी को पकड़ने के लिए औरङ्गजेब की सेना का पीछा करना, जयसिंह के पुत्र मर्द्दान सिंह का शिवजी से आत्म समर्पण का प्रस्ताव, शिवाजी द्वारा उनको मुंहतोड़ उत्तर। दशम अङ्क में शिवाजी का राज्यभिषेक, स्वामी रामदास का शिवाजी को आशीर्वाद-ताप प्रभृति वर्णन है। यह लम्बी कथा नाटक को महानाटक का रुप देती है। नाटक में शिवाजी के उत्साही, दृढ़संकल्प, भय-विहीन, दुर्धर्ष वीर-चरित वर्णित है-

"तेजस्विनं कौशलिनं महाथियं शूरं तथा को नु रुणद्धि हन्तु वा।
आहन्यमानोऽग्निकणो हि तेजसा प्रवर्धते संचरतेऽन्यवस्तु वा।।"

मिवारप्रतापम् - मिवारप्रताप षष्ठ अङ्क विशिष्ट नाटक है। प्रथम अङ्क में अकबर के सेनापति मानसिंह के उदयपुर आगमन से होता है, जिसमें मानसिंह के स्वागत में राणाप्रताप या उनके पुत्र अमर ने उनके साथ भोजन न कर उनका तिरस्कार किया।

मानसिंह अपमानित होकर दिल्ली लौटा, जिसके फलस्वरूप मुगलसेना ने राणा प्रताप से युद्ध की तैयारी की - "यद्यमुष्य प्रतीकारं न कर्य्यां वीर्य्यवानपि। तदाम्वरं न यास्यामि यास्याम्वरतां पुनः।"

द्वितीय अङ्क मुगलोद्यान में मीना बाजार (महिला मेला) का वर्णन है। इस महिला मेला में बीकानेर के पृथ्वीराज की रानी कमला को बुलाया गया था, कमला के प्रति अकबर की दृष्टि ठीक नहीं थी, कमला ने अपनी कटार निकाल ली और उद्यानपालिका को आतंकित कर उद्यान से घर चली गयी। नाट्यकार ने पृथ्वीराज की रानी कमला द्वारा मुगलोद्यान में हिन्दुत्व गौरव की याद कराकर तथा राणा प्रताप में विधर्मियों में विजय किये जाने की आशा बांधकर इस मुगलोद्यान मेला को मुख्यकथा के साथ संयुक्त किया है। इस संयोजन को उक्ति विन्यास कहा जा सकता है। रानी कमला की हार्दिक कामना है -

"एकः स्फुलिंगो ग्रसते महावनं
रुद्रः किलैको धुनुते जगज्जनान्।
एको मरुत् पातयते च पादपान्
एकः प्रतापोऽपि तपेद् विधर्मिणः।।"

तृतीय अङ्क में दिल्ली लौटकर मानसिंह अपने अपमान की बात बादशाह अकबर से कहता है। अकबर के पुत्र सलीम भावी जहांगीर के नेतृत्व में एक लाख मुगल सेना ने राणा प्रताप को दण्डित करने के लिए आक्रमण किया। चतुर्थ अङ्क में राणा प्रताप की राजपूत सेना ने हल्दीघाटी के मैदान में मुघल सेना का सामना किया, हारजीत तो किसी के पक्ष में नहीं हुई, लेकिन राणा प्रताप को अपनि रक्षा की दृष्टि से युद्धभूमि से हट जाना पड़ा। ठीक उसी समय उनको भाई शक्ति सिंह के हृदय में भाई के प्रति अगाध स्नेह उमड़ पड़ा, अब तक शक्तिसिंह मुगल-सेना के साथ था। लेकिन भाई द्वारा सम्मान की रक्षा हेतु युद्ध में यह पराक्रम देखकर उसने अपने को धिक्कारा, वह आगे भाई की रक्षा के लिए बढ़ा, जो दो मुगल सैनिक राणा प्रताप का पीछा कर रहे थे, उनको रास्ते में तलवार के घाट उतार दिया। दोनों भाई गले मिले। इसी समय राणा प्रताप का चेतक अश्व जो युद्ध से थक चुका था, मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गायी। राणा प्रताप का हृदय उसके प्रति संवेदना से भर उठा। इस प्रकार इस नाटक का चतुर्थ अङ्क समूची कथावस्तु का हृदय है। पञ्चम अङ्क में राणा प्रताप के वनवासी जीवन ओर उसकी कठिनाइयों का वर्णन है, जिसमें उनको अपनी कन्या के लिए घास की रोटी पकानी पड़ी और उसे भी वनविलाव उठा ले गया। इस पर उन्होंने अकबर को सन्धि पत्र लिखा। षष्ठ अङ्क में अकबर ने वह सन्धि-पत्र उत्तर लिखावाया। पृथ्वीराज ने कुछ ऐसा लिखा, जिससे राणा प्रताप को अपने किये संघर्ष के महान् गौरव का बोध हुआ और वे पुनः अपने देश की स्वतंत्रता के संघर्ष में संलग्न हो गये। उनके पुराने खजांची भामाशाह ने उन्हें ले आकर विपुल धन दिया, जिससे खाद्य सामग्री इकट्ठा कर राणा प्रताप ने पुनः सेना का संगठन किया। देवीदुर्ग पर आक्रमण करके उसे विजित किया गया, दुर्ग में रहने वाले शाहबाज को बन्दी बना लिया गया, भागते हुए मुगल सैनिकों ने दुर्ग में आग दी। भीलों ने उसे खाई के जल से बुझा दिया। अन्ततः राणा प्रताप विजयी हुए। राणा प्रताप के साथ भीलों के सहयोग का वर्णन यथार्थ स्थिति का चित्रण है। नाटक में पात्रौं की संख्या 50 के लगभग है।एक तरह से देश-प्रेम ही नाटक का विधेय है और वह देश भारत, हिन्दुस्थान है-

"हिन्दुस्थाने यवनवसतिर्नोचिता भारतेऽस्मिन्
नीहारौघस्थितिरिव शरद्व्योम्नि नक्षत्रदीप्ते।
तस्मादस्मान्निजनिजधिया यात यूयं स्वदेशान्
अस्रस्रोतः स्रवतु न खलु च्छिन्नभिन्नाच्छरीरात्।।"

बङ्गीयप्रतापम् - बङ्गीयप्रताप में संगीत द्वारा नाटक का भाव प्रकाश हुआ था। नाटक में संगीत, आध्यात्मिकता, साधना, नृत्य, विजयोल्लासादि वर्णन है।प्रथम अङ्क में शङ्कर नाम के एक व्यक्ति यवनों के अत्याचारों की वाद की है।द्वितीय अङ्क में वैष्णव संत श्रीनिवास के संगीत के माध्यम से मानव जीवन और आध्यात्मिक खोज की नश्वरता से संबंधित है। तृतीय अङ्क में विष्कम्भक, धीवरगण की प्राकृत भाषादि वर्णन है। पञ्चम अङ्क में नृत्य और गीत के माध्यम से विजयोल्लास किया है। बङ्गाल के यशोर राज्य के राजकुमार प्रताप के वीर चरित और हिन्दुत्व प्रेम की यशोगाथा है। इस रचना का काव्य पक्ष तो उदात्त है।

विराजसरोजिनी - विराजसरोजिनी इतिहास घटनावलम्वने द्वितीय नाट्यकृति है। इसकी रचना हरिदास महाशय युवावस्था में 1999 ईस्वी में की थी। पहले नौ नृत्य और गीत है। पहले अंग में श्रृंगार रस का गीत नायिका और उसकी सहेलियों द्वारा गाया जाता है। यह गीत मातृभूमि की भक्ति, और उसकी रक्षा की बात करता है। रचना में वीर रस की प्रधानता है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार हरिदास महाशय वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हैं और संगीत के माध्यम से मातृभूमि के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं।

कंसवधम् – कंसवध की कथा पर आधारित कंसवधम्।

जानकीविक्रमम् – जानकी विक्रम दशरथ नंदन रामचंद्र की वीरकथा के बारे में है।

वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य - वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य (1917-1982) ने आधुनिक संस्कृत साहित्य के इतिहास में विशेषकर संस्कृत नाटक के क्षेत्र में विशेष भूमिका निभाई। बेङ्कट राघवन की तरह उन्होंने भी संस्कृत की विभिन्न शाखाओं का आधुनिकीकरण किया है। वे कलकत्ता में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक थे। कई वर्षों तक पश्चिम बंगाल सरकार और केंद्र सरकार के अधीन प्रशासनिक सेवा में भी काम किया।

वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य के नाट्यकृति - कविकालिदासम्, गीतगौराङ्गम् (1974), शूर्पणखाभिसार, सिद्धार्थचरितसम्, शार्दूलशकटम् (1969), वेष्टनव्यायोगः (1971), शरणार्थि संवादः, मार्जिनाचातुर्यम्(अलीबाबा और चालीस चोर), चार्वाकताण्डवम्(चार्वाक के अनुसार अन्य दर्शनों का अनुवाद), सुप्रभास्वयंवरम्(अष्टावक्र और सुप्रभा की प्रणयकथा), मेघदौत्यम्(मेघदूत की कहानी), लक्षणव्यायोगः(नक्सल आंदोलन), झञ्झावृत्तम्।

कविकालिदासम् - विप्रलंभ श्रृंगार पर आधारित यह 7 अङ्क नाटक सर्वप्रथम 1967 ई. में संस्कृत पुस्तक भंडार द्वारा प्रकाशित किया गया था, लेकिन इसे 1969 ई. में पुनर्प्रकाशित किया गया। यह नाटक कालिदास के जीवन पर आधारित है। विक्रमादित्य की पुत्री मञ्जुभाषिनी के साथ कालिदास का गोपन प्रेम। राजकुमारी कालिदास की रचना से प्रेरित होती है और प्यार में पड़ जाती है। जब राजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने कालिदास को एक वर्ष के लिए रामगिरि पर्वत पर रहने के लिए चुन लिया।पञ्चमाङ्क में लंबे समय के बाद, दोनों का विवाह राजा द्वारा किया गया था। इस नाटक में प्रस्तावना और भरतवाक्य है लेकिन नान्दी नहीं है। यहाँ कालिदास को एक प्रथितयश कवि के रूप में दिखाया गया है। नाटककार ने इस नाटक में कालिदास रचना के 25 श्लोकों का प्रयोग किया है। भाषा की मधुरता और भाव अभिव्यक्ति की गंभीरता नाटक की विशेषता है। नाटककार ने इस नाटक में पुराने छन्द के साथ-साथ अनेक नये छन्द का प्रयोग किया है।

श्रीगीतगौराङ्गम् - वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य का सर्वश्रेष्ठ गीतिनाटक श्रीगौराङ्ग है। पञ्चमाङ्क इस नाटक में 30 दृश्य, 81 सङ्गीत, 6 राग और 75 रागिणीयाँ हैं। कृष्ण भक्ति के अवतार गौराङ्ग महाप्रभु चैतन्य के जीवन का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त नाट्यकार ने चैतन्य को सरल भाषा में समाज के कुसंस्कार को दूर कर समाज सुधारक की भूमिका में चित्रित किया है। वहीं, उनके भक्ति और प्रेम भावनाओं को पाठक के सामने पेश किया गया है। इसलिए नाटककार नाटक की शुरुआत में कहता है -

"उदात्त ध्वनितं कण्ठे नववाक्यं महात्मनः।
चन्डालोऽपि द्विजश्रष्ठो हरिभक्तिपरायणः।।"

प्रथमाङ्क में - गौराङ्ग का बचपन, विवाह और लक्ष्मीदेवी की सर्पदंश आदि से मृत्यु।
द्वितीयाङ्क में - विष्णुप्रिया के साथ गौराङ्ग का दूसरा विवाह, श्रीवत्स अद्वैत, शचीविष्णुप्रिया की बातचीत और गौराङ्ग का भक्तिमहात्म्य वर्ण आदि।
तृतीयाङ्क में - सन्न्यास ग्रहण, तीर्थयात्रा, भक्तों के साथ नीलाचलधाम प्रस्थान आदि।
चतुर्थाङ्क में - विष्णुप्रिया के बिरह, गोदावरी के तट पर श्रीचैतन्य के विद्यानगर के रामानन्द के साथ साक्षात्कारादि।
पञ्चम्ङ्क में - भक्तों द्वारा चैतन्य महात्म्यकीर्तन, हरिदास का साक्षात् और मृत्यु। कृष्णाभावे चैतन्य के उन्माद, भैरवीराग का गीत और नृत्य। इस नाटक की विशेषता यह है कि चैतन्य के प्रेम और भक्ति के प्रवाह का वर्णन किया गया है। चैतन्य ने शूद्र रामानंद से कहा - जाति का कोई महत्व नहीं है - सर्वाचारान् परित्यज्य श्रीकृष्ण शरणं व्रज।

शूर्पणखाभिसार - शूर्पणखाभिसार एक गीतिनाट्य है। पद्य रूप जैसे पांच दृश्यों में लिखे गए राम लक्ष्मण के लिए लंकराज रावण की बहन शूर्पणखा के प्रेम को यहां देखाया गया है। इस गीतनाट्य में बहुत संगीत है। शूर्पणखा ने राम को प्रणाम किया और स्तुति किया -
सौरवंशदीपं दुर्जनप्रतीपं श्रीरामं रम्यतनु भूपगौरवम्... ।

सिद्धार्थचरितसम् - वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक सिद्धार्थचरित है। आठ अङ्क वाले इस नाटक में सिद्धार्थ(गौतम वुद्ध) के जीवन को वर्णित है। नान्दी की तरह, शुरुआत में एक लंबी प्रस्तावना और अंत में भरतवाक्य है। प्रस्तावना के माध्यम से नाटककार कहता है - सूत्रधार के मुख से संसार में अब विनाशकारी गतिविधियाँ चल रही हैं। तो बुद्ध को नमन करते हुए, नाटककार ने मंगलाचरण किया - ज्ञानाद्धिं सौम्यमूतिं निखिलनरमतं स्तौमि तं वुद्धदेवम्।
प्रथमाङ्क में - देवदत्त के बाण से घायल हंस की सेवा किया सिद्धार्थ ने। देवदत्त हंस को लेना चाहता है, लेकिन सिद्धार्थ हंस को बचा लेता है।
द्वितीयाङ्क में - गौतमी और यशोधरा समाचार।
तृतीयाङ्क में - मालविका, तरलिका, मन्दारिका आदि साखियों के संवादों में सिद्धार्थ की पूर्ववृत्तान्त, स्वभाव और गुणों का पता चलता है।
चतुर्थाङ्क में - पुत्र सिद्धार्थ को संसार धर्म में वापस लाने के लिए कुशल मालविका का उपयोग।
पञ्चमाङ्क में - सारथि छन्दक और वृद्ध के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि सिद्धार्थ ने "वहुजनहिताय सुखाय च" सन्न्यास ले लिया है। सुजाता के घर क्षीर खाकर फिर से निकल पड़ा।
षष्ठाङ्क में - विष्कम्भक में छन्दक और कश्यप का संदेश। इस अङ्क में पञ्चदशी, सप्तदशी आदि मायाकन्या के संलाप, नृत्य और गीत भी सिद्धार्थ की साधना भंग नहीं कर पाई।
सप्तमाङ्क में - सिद्धार्थ के" बोधि"प्राप्त करने के बाद, उन्होंने शिष्यों को आर्यसत्यचतुष्टय, अष्टाङ्ग, शीलपञ्चक आदि पर उपदेश दी।
अष्टमाङ्क में - सञ्जय, पुष्कर, दुर्भाष, श्रावन्ती आदि नागरिकों के संवाद में गौतम बुद्ध के विश्वव्यापी

रूप, यशोधरा, गौतम शुद्धोधन के बौद्ध धर्म को अपनाने आदि का ज्ञान।

शार्दूलशकटम् - वीरेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा लिखित पञ्चाङ्क यह प्रकरण राष्ट्रीय परिवहन संस्था के कर्मचारियों की समस्याओं और समाधानों की एक वास्तविक तस्वीर है। यह प्रकरण में एक नई शैली लिखी गई है। इसलिए प्रस्तावना में -

> "नवीनैः काम्यते नवयुग कथा नूतनं दृश्यकाव्यम्।" (1/3)

इस प्रकरणे में नायक आदिशूर है। इसके अलावा, वह एक अधिकारी, मजदूर नेता, ड्राइवर, चापरासी आदि के रूप में उपयुक्त है। प्रथमाङ्क में मजदूर संघ का विवाद, द्वितीयाङ्क में प्रधानाध्याक्ष ओर मजदूरों की बातचीत, तृतीयाङ्क में दुर्गापुर डिपो के कर्मचारियों की हड़ताल वापस लेना, चतुर्थाङ्क में मजदूरों के दैनिक जीवन दशा, पञ्चमाङ्क में गृह मंत्रालय एवं परिवहन विभाग के हस्तक्षेप से सभी समस्याओं का समाधान। नाटककार-मन्दयाना, नीलकण्ठी आदि ने नवीन 40 छन्दौं की रचना की है। प्रकरण में विभिन्न संगीत, नौकरशाहों के पक्ष और विपक्ष, श्रमिकों की पीने की प्रवृत्ति, टेलीफोन सेवा की समस्याएं, सहकारी समितियों के उद्देश्य आदि पेश किए गए हैं। इस प्रकरण में नाटककार ने परित्यक्तों को सही मार्ग पर आने का निर्देश दिया है। इस प्रकरण की भरतवाक्य में - "नमामि कलकाता परिवहणसंज्ञंस्थां... नमामि नौमिताम्।" (5/107)
नाटककार स्वयं इसे प्रकरण मानते हैं। उसने सूत्रधार के माध्यम से कहा -

> "अद्य खलु उपस्थाप्यतेऽत्र वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्येण विरचितं शार्दूलशकटनामकम् अभिनवं प्रकरणम्।"

वेष्टनव्यायोग - इस व्ययोग श्रेणी रूपक में 'घेराबंदी' के हास्यपूर्ण परिणामों का वर्णन किया है जिसने प्रशासनिक अधिकारियों को श्रमिकों की मांगों को मानने के लिए मजबूर किया। यह एकाङ्क और प्रहसन भी है। सूत्रधार अतिरिक्त और आठ अन्य चरित्र हैं। इसमें आनन्द के कई गीत, बंगाली कहावतों का संस्कृतिकरण, सूक्ति शामिल हैं। देशी-विदेशी संस्कृत शब्दों का प्रयोग - चलदिदं चलिष्यति, शिल्पाध्यक्ष, प्रकाश्यहट्ट, कृष्णहट्ट(Black Market) आदि स्मरणीय है।

शरणार्थि संवाद - यह नाटक 1972 ई. में 'संस्कृत साहित्य परिषद पत्रिका' कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। नाटक का विषय- बंगाल विभाजन के बाद पूर्वी पाकिस्तान और अब बांग्लादेश से आने वाले शरणार्थियों की समस्या। नाटककार बीरेन्द्र स्वयं पश्चिम बंगाल में पुनर्वास केंद्र के निदेशक थे। इसलिए उन्हें शरणार्थियों की दुर्दशा का अनुभव था। नाटक मुख्य रूप से शरणार्थियों के संवाद पर आधारित है। दोरथि, आनन्द, मन्दवी, फरीद, आदिशूर आदि पात्रों के माध्यम से बांग्लादेश शरणार्थियों की स्थिति का पता चलता है। इस नाटक में पाकिस्तानी जनरल इयाहिया खान, बांग्लादेश के शेख मुजीबर रहमान, भारतीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गान्धी के पात्रों को चित्रित किया गया है। नाटक से पता चलता है कि इन्दिरा गान्धी ने त्रिपुरा, असम, पश्चिम बंगाल, मेघालय आदि स्थानों पर शरणार्थियों के लिए आश्रय स्थल बनवाए थे। इस नाटक में शरणार्थियों के भय, शोक, भावनाओं आदि को देखा गया है, साथ ही शत्रु की हिंसा, घृणा और अत्याचार को भी प्रकट किया गया है। इस नाटक की भरतवाक्य बहुत सुन्दर है। आदिशूर के वचन में - "... क्लेशो न गण्यते क्लोशो भवद्भिरिति सुखम्।"

मेघदौत्यम् - कालिदास के काव्य 'मेघदूत' को 'मेघदौतम्' नाट्यरूप दिया है।

लक्षणव्यायोग - यह नाटक उन्होंने नक्सली आंदोलन पर आधारित लिखा था।

यतीन्द्रविमल चौधरी - प्रसिद्ध कवि और नाटककार यतीन्द्रविमल चौधरी का जन्म 2 जनवरी, 1909 को बांग्लादेश के चट्टगाँव के कदुरखिल गाँव में हुआ था। उन्होंने प्रेसीडेन्सी कॉलेज से बीए और एमए पास किया। लन्दन विश्वविद्यालय से पी.एइच.पी., ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी.फिल. किया। वङ्गीय संस्कृति परिषद के सचिव (1949-1964) यतीन्द्रविमल चौधरी ने संस्कृत के प्रचार और प्रसार के लिए 'प्रच्यवाणी' की स्थापना की। वहां उन्होंने संस्कृत, बंगाली, अंग्रेजी में लगभग 150 प्रवन्ध लिखे। यतीन्द्रविमल चौधरी की पत्नी प्रसिद्ध लेखिका और रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय की कुलपति रमा चौधरी हैं। प्रच्यवाणी संस्थान के माध्यम से 20 से अधिक संस्कृत नाटकों का मंचन किया गया, जिसकी स्थापना यतीन्द्रविमल ने की थी। पूरे भारत में संस्कृत नाटकों का मंचन कर उन्होंने बहुत ख्याति प्राप्त की।

यतीन्द्रविमल चौधुरी के नाट्यकृति -

दीनदासरघुनाथम् (1962), दीननाथम्(1962), देशवन्धुदेशप्रियम् (1965), निष्किञ्चनयशोधारम् (1958), भारतराजेन्द्रम् (1961), भारतलक्ष्मीनाटकम् (1967), महिममयभारतम् (1960), भारतविवेकम् (1963), भारतभास्करम् (1961), भारतहृदयारविन्दम् (1960), भास्करोदयं महानाटकम् (1961),भुवन भास्करम् (1962), महाप्रभु-हरिदासम् (1960), मुक्तिसारदम् (1958), मेलनतीर्थ-भारतम् (1962), रघुनाथम् (1962), विमल-यतीन्द्रम् (1962), विश्वविवेकम् (1963), शक्तिसारदम् (1960), सुभाषसुभासम् (1962),स्वप्नरघुवंशम् (1962), अमरमीरम् (1962), आनान्दराधम् (1962),रक्षकश्री गोरक्षम् (1958), प्रीतिविष्णुप्रियम् (1958), भक्तिविष्णुप्रियम् (1958)।

भारतविवेकम् - भारतविवेक नाटक में नायक रामकृष्ण के नृत्य और गीत, नरेन्द्रनाथ द्वारा जननी के बारे में संगीत नाटक ने दृष्टि आकर्षित किया है -

प्रथम दृश्य - 1881 ई. में कलकत्ता के शिमला क्षेत्र में सुरेन्द्रनाथ मित्रा के घर की घटना।

द्वितीय दृश्य - दक्षिणेश्वर मंदिर की घटना।

तृतीय दृश्य - दक्षिणेश्वर के भवतारिणी मंदिर में रामकृष्णदेव के कमरे में रामकृष्णदेव और नरेंद्र के बीच सुबह की बातचीत।

चतुर्थ दृश्य - रामकृष्णदेव के घर में रात में रामकृष्णदेव और नरेंद्रनाथ के बीच बातचीत।

पञ्चम दृश्य - 11 मार्च 1885 ई. में दक्षिणेश्वर के भवतारिणी मंदिर में रामकृष्णदेव के घर की घटना।

षष्ठ दृश्य - 1886 ई. काशीपुर परमहंसदेव की महासमाधि के एक दिन पहले।

सप्तम दृश्य - हावड़ा जिले के घुसुरी गांव में एक भक्त के घर में।

अष्टम दृश्य - आलोयर के महाराजा दीवानजी रामचन्द्र के भवन में। फरवरी 1891 ई।

नवम दृश्य - गुजरात के लिम्बडीपुरी में स्वामीजी का खतरा।

दशम दृश्य - श्रीरामेश्वर कन्याकुमारिका मंदिर के पास विवेकानंद शिला। स्वामीजी की आत्मनिर्णय की संकल्पना।

एकादश दृश्य - मद्रास नगर में श्रीमनमथनाथ भट्टाचार्य के घर पर।

द्वादश दृश्य - खेतड़ि महाराज के आग्रह पर विवेकानंद के नाम ग्रहन और स्वामीजी की अमेरिका यात्रा।

भास्करोदयम् - नाटककार ने भास्करोदय में कविन्द्र रवीन्द्र के प्रारंभिक चरण में संगीत के उपयोग के लिए रवीन्द्रनाथ के गीतों भी प्रयोग किया है।

मुक्तिसारदम् - भारतहृदयारविन्द और मुक्तिसारद नाटक में संगीत और स्तोत्रों की प्रधानता देखी जाती है।

महाप्रभु-हरिदासम् - सात अंक का नाटक भगवान चैतन्य के एक महान भक्त यवन हरिदास के जीवन का वर्णन करता है। पुरीनगरी में रथ यात्रा के अवसर पर नाटक का मंचन किया गया। नाटक में हरिदास, लक्षहीरा के समाचार, सप्तग्राम में हरिदास की लीला, फुलिया गांव में हरिदास की लीला आदि का चित्रण नाटककार ने बड़ी खूबसूरती से किया है। नाटककार ने इस नाटक में संगीत की भरपूर प्रस्तुति दी है। इस नाटक की विशेषता यह है कि - पंचमंक गर्भनाटक के तीसरे दृश्य में छाया तत्त्व के अनुसार जोड़ा गया है। सप्तमंका में हरिदास के जीवन के अंत में उनके महानिर्वाण की चर्चा है। भक्तिरस प्रधान यह नाटक लोकप्रिय हुआ।

भारतलक्ष्मीनाटकम् - भारतलक्ष्मीनाटक राणी लक्ष्मीबाई के जीवन, कार्यों और संघर्षों की कहानी सुनाई गई है। वीर रस प्रधान, करुण रस अप्रधान के रूप में, शब्दालंकार और अर्थालंकार के प्रयोग में नाटक सार्थक हो गया है।

महिममयभारतम् - महिममयभारत नाटक में सिंधुक्षित् वैदिक ऋषि , नारद, ब्रह्मा, विष्णु से उत्पन्न गंगा। शाहजहाँ की पुत्री जहानारा, यमुना नदी के दो मजदूर राम और रहीम आदि अतीत और अर्वाचीन काल में वर्णन किया गया है। केंद्रीय मंत्रियों के समक्ष 20 अप्रैल 1959 को नाटक का मंचन किया गया।

मेलनतीर्थ-भारतम् - मिलन तीर्थ नाटक में 10 अंक हैं, पहले चार अंक में अथर्व ऋषि, अगस्त्य, अशोक, बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लंका यात्रा, पंचमंका में अकबर, फिर चैतन्य, विवेकानंद, रवींद्रनाथ, गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू विश्वामित्री प्रयासादि इस नाटक में भारतीय संस्कृति का वर्णन किया गया है।

निष्किञ्चनयशोधारम् - निष्किञ्चनयशोधार सात अंक के इस नाटक में नायिका सिद्धार्थ की पत्नी और राहुल की माँ गोपा या यशोधरा की वक्तव्य, सिद्धार्थ के साथ संवाद, उनके प्रभाव में महिलाओं का बौद्ध धर्म ग्रहण।, यशोधरा का परिनिर्वाण आदि का चित्रण किया गया है। नाट्यकार यतीन्द्रविमल चौधरी ने देशभक्ति की प्रेरणा से और महापुरुषों के तेजस्वी चरित्रों का सम्मान करते हुए अनेक देशभक्तों और महापुरुषों के चरित्रों पर आधारित नाटकों की रचना की है।

भारतहृदयारविन्दम् - भारतहृदयारविन्दम यह पञ्चमाङ्क नाटक है। नाटक में स्वतंत्रता आंदोलन अरबिन्द को एक सैनिक के रूप में और बाद में उनके दिव्यजीवन पर नाटक करता है। अलीपुर बमकांड जैसी घटनाओं को भी दिखाया गया है।पञ्चमाङ्क में अरबिन्द ने जो धार्मिक जीवन शुरू किया, उसकी चर्चा की गई है। उन्होंने वहां देशवासियों से भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने का आह्वान किया- "छित्वा पाशमिमं तदीयवदनं फुल्लंविधातुं वयम्..." ।

अमरमीरम् - द्वादशाङ्क विशिष्ट इस नाटक में श्रीकृष्णप्राण मीरा के विवाह उत्तर जीवनियों का विस्तार से चित्रण किया गया है। मीरा का कृष्ण भजन बहुत प्रसिद्ध है।

देशवन्धुदेशप्रियम् - यह यतीन्द्रविमल का लोकप्रिय नवमाङ्क विशिष्ट नाटक है। देशबंधु चितरंजन दास के जीवन की विभिन्न गौरवशाली कृतित्वओं, गांधीजी के आह्वान पर वकालत छोड़कर असहयोग आंदोलन में शामिल होने, ब्रह्म समाज में पोषित होने के बावजूद अहिंसक आंदोलन में शामिल होने, साहित्यिक उपलब्धियों, आत्म-त्याग, देशभक्ति आदि

का वर्णन किया गया है। इसके अलावा, देशबंधु के अतिरिक्त, स्वतंत्रता आंदोलन के एक अन्य प्रसिद्ध नेता देशप्रिय यतीन्द्रमहोन सेनगुप्ता के राजनीतिक जीवन की विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं को नाट्यकार सहज, सरल संस्कृत भाषा में चित्रित किया है।

स्वप्नरघुवंशम् - यतीन्द्रविमल की प्रथम नाटक 'स्वप्नरघुवंशम' है। यह नाटक महाकबी कालिदास के महाकाव्य 'रघुवंशम्' पर आधारित है। उज्जैन के कालिदास महोत्सव वर्णन यतीन्द्रविमल इस नाटक में किया।

भारतजनकम् - 16 अंक का यह नाटक राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी की अफ्रीका यात्रा से लेकर भारत की आजादी के लिए उनके संघर्ष तक की कहानी वर्णित है। विशेषकर देश में भारत को अंग्रेजों के हाथों से मुक्त कराने के कठिन संघर्ष की कहानी का चित्रण किया गया है।

रक्षकश्रीगोरक्षम् - यह सात अंक का नाटक नाथ सम्प्रदाय के गुरु गोरखनाथ के जीवन पर आधारित है।

आनान्दराधम् - 'प्रणवपारिजात' पत्रिका (1962) में 11 अङ्क का नाटक नायक श्रीकृष्ण और नायिका श्री राधा। यहाँ हम दुःख के बावजूद राधा के आनंद की छवि पाते हैं। तो नन्द ने राधा से कहा - "आनन्दस्वरूपे राधे! आनन्दं विस्तारय।"
इस नाटक के भरतवाक्य में ऋग्वेद की शांतिवाणी द्यौः शान्तिः अपः शान्तिः... आदि। इस नाटक में राधा-कृष्ण के साथ-साथ कंस, अक्रूर, यशोदा, नंद, सुदामा आदि का वर्णन किया गया है। यहा मुक्तकच्छन्दोवद्ध भावधर्मी से राधा की संध्यास्तुति, नटी के गीत, वृंदा और ललिता के संगीत का प्रदर्शन यहां किया गया है। नाटक में कृष्ण के साथ गोपियों का नृत्य (रासलीला) - इसकी व्यवस्था प्रासंगिक थी।

पञ्चानन तर्करत्न - महामहोपाध्याय पञ्चानन तर्करत्न का जन्म 1866 में उत्तर चौबीस परगना जिले के भाटपारा में हुआ था। उनके पिता नंदलाल विद्यारत्न, माता शशिमुखी देवी। भाटपारा के पंडित जयरामेश ने न्यायभूषण से सुपद्म व्याकरण और काव्य, महामहोपाध्याय शिवचंद्र सार्वभौम से नवन्याय, मधुसूदन स्मृतरत्न से स्मृति शास्त्र और अपने पुत्र ऋषिकेश शास्त्री से सांख्यदर्शन लिया। 19 वर्ष की आयु में उन्होंने काव्य, व्याकरण, न्याय, स्मृति, सांख्यादि का अध्ययन समाप्त कर घर पर ही अध्यापन प्रारंभ किया। 1888 में, बंगाली कार्यालय के प्रतिष्ठाता योगेंद्र बोस के खर्च पर रामायण, 18 संहिताओं, 18 पुराणों का अनुवाद प्रकाशित किया गया था। 'जन्मभूमि' पत्रिका के संपादक, राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल होने के लिए 1907 में कैद। वह बंगाली ब्राह्मण सभा और वर्णाश्रम स्वराज्य संघ के संस्थापक थे, बंगाली साहित्य परिषद के सहायक अध्यक्ष, जिसने भट्टापल्ली में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की। 1904 में पंडित पञ्चानन तर्करत्न काशीधाम में निधन हो गया।
मात्र 13 वर्ष की आयु में काव्य की उपाधि पास करके 'काव्यतीर्थ' और 'काव्यकण्ठ' की उपाधि प्राप्त की। महाहोपाध्याय शिवचंद्र सार्वभौम ने उन्हें 'तर्करत्न' की उपाधि दी। 1929 में उन्हें भारत सरकार द्वारा 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से विभूषित किया गया।
पञ्चानन तर्करत्न के नाट्यकृति - अमरमङ्गलम् (1907), कलङ्कमोचनम् (1907)।

अमरमङ्गलम् - राणा प्रताप के पुत्र राणा अमर सिंह (1597-1620) के राजत्व और शासन से संबंधित है नाटक की विषय वस्तु इस नाटक में नाटककार ने एक ऐसे ऐतिहासिक चरित्र का चयन किया है, जो निश्चय ही समझौता-विरोधी पात्र है। इसमें 8 अङ्क

हैं। इस नाटक का मुख्य विषय चितोर के किले की मुगलों के हाथों से मुक्त राखना। नाटककार राम के पुत्र लव के वंशज के रूप में चितोर के क्षत्रिय वंश को दिखाता है। उन्होंने 'राजस्थान का इतिहास' से जानकारी ली। नाटक की शुरुआत वीरा वैश्या और अमरसिंह के प्रेम से होती है। अमरसिंह के चाचा सागरसिंह ने अमरसिंह का राज्याभिषेक किया। विजय गीत के साथ चितौड़ेश्वरी का प्रार्थना गीत गाती हैं। इस नाटक में नाटककार अपनी कल्पना को दूसरी से पाँचवीं तक विस्तृत करता है। पूरा नाटक हिंदू स्वतंत्रता, अमर सिंह की देशभक्ति और वीरा के आत्म-बलिदान के विचार को उद्वेलित करता है –

"प्रेमः सुखं येन जनेन लब्धं
न तस्य शरीरसुखेऽभिलाषः।"

कलङ्कमोचनम् - कलंकमोचन नाटक में राधा-कृष्ण के 'अनुराग' प्रेम प्रकाशित हुआ है।

कालीपद तर्काचार्य - कालीपद तर्काचार्य - 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, एक व्यक्ति जो बहुत अच्छा संस्कृत बोल सकता था, अभिनय कर सकता था, वह महामहोपाध्याय कालीपाद तर्काचार्य थे। वह एक पश्चिमी वैदिक परिवार के एक ब्राह्मण सन्तान हरिदास तर्कतीर्थ के पुत्र थे। उनकी माता सीता सुंदरी हैं। 1888 में कोटालीपारा, फरीदपुर, बांग्लादेश के तहत उंशिया गांव में पैदा हुए। वह प्रसिद्ध बंगाली वेदांतिक और बाद में रसशास्त्र के विद्वान परमहंस परिब्रजकाचार्य मधुसूदन सरस्वती के वंशज हैं। उंशिया कहे जाने वाले पंडित प्रमुख ग्राम की परंपरा के अनुसार, कालीपद ने सबसे पहले अपने पिता के भाई सीतानाथ विद्याभूषण, कालीकांत शिरोमणि और कोलकाता के प्रसिद्ध वैयाकरण भुवनेश्वर विद्यालंकार से कलापव्याकरण पाठ के साथ व्याकरणतीर्थ, उस कॉलेज के प्रसिद्ध पंडित महामहोपाध्याय शिवचंद्र सार्वभौम के द्वारा नवन्याय प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त।

कालीपद तर्काचार्य 1918 में 'संस्कृत साहित्य परिषद' विश्वविद्यालय के अध्यापक और संस्कृत साहित्य परिषद पत्रिका के सहायक संपादक बने, 1931 में कलकत्ता संस्कृत कॉलेज में न्यायशास्त्र के अध्यापक बने और टोल विभाग का सर्वोच्च पद प्राप्त किया। 'विद्योदय' और 'आर्यप्रभा' नामक पत्रिकाओं में संस्कृत में अनेक प्रबन्ध लिखे। उन्होंने 'संस्कृत पद्यवाणी' त्रैमासिक पत्रिका की स्थापना और 'संस्कृत पद्यवाणी' संस्कृत सभा 'संस्कृत की स्थापना की। 27 जुलाई 1972 को हुगली के भद्रकाली में शांतिनगर में 'कश्यपश्रम' नामक उनके घर में उनका निधन हो गया।

शिवचंद्र सार्वभौम उन्हें'तर्काचार्य की उपाधि दी। विभिन्न 'तीर्थ' उपाधियाँ अर्जित कीं। 1941 में भारत सरकार ने उन्हें 'महामहोपाध्याय', काशी के भारतवर्ष महामंडल को 'विद्यानिधि'। श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य ने उन्हें 'तर्कलंकार' से सम्मानित किया, हावड़ा संस्कृत साहित्य परिषद ने उन्हें 'महाकावी' से सम्मानित किया, वर्धमान विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डी.लिट' से सम्मानित किया।

कालीपद तर्काचार्य के नाट्यकृति -

नलदमयन्तीयम् (1917), माणवक-गौरवम् (1958), स्यमन्तकोद्धारव्यायोगः,प्रशान्त रत्नाकरम् ।

प्रशान्त रत्नाकरम् - नौ अंक वाले इस नाटक में, कालीपद महाशय वाल्मीकि ने नाटक किया है कि कैसे रामायण के डाकू रत्नाकर वाल्मीकि में बदल गए। खूंखार दस्यु रत्नाकर ब्रह्मा और नारद के प्रयत्नों से पापात्मा शुद्ध होकर रामनाम के जप से प्रशांत रत्नाकर में परिवर्तित हो जाता है। इस नाटक के दूसरे अंक में लीलावती नामक वेश्या के नृत्य का वर्णन किया गया है। षष्ठांक कौमुदी उत्सव के लिए इस वेश्या अभिनय में नृत्य करने के तरीके के बारे में विवरण हैं। इस नाटक में बताया गया है कि 20वीं शताब्दी में महिलाओं को निराश्रय करके

शोषण किया जा सकता था और वेश्यावृत्ति में नृत्य गीत का बहुत महत्व था। इस नृत्य के दौरान मृदंग का प्रयोग किया जाता था।

नलदमयन्तीयम् - 1917 में लिखे गए कालीपद महाशय के नाटक 'नलदमयन्तीयम्' में विदर्भ राजकुमारी दमयंती और निषाद देश के राजा नल की प्रेम कहानी इस नाटक का विषय है। इस नाटक की प्रथमांक के शुरुआत में वनपाल और उनकी पत्नी विष्कम्भक में मंच पर नाचते-गाते नजर आते हैं। और विदूषक इस पर हंस रहा है। तीसरे अंक में विवेक और मोहरूपी ने प्रतीकात्मक पात्रों द्वारा संगीत के साथ अगली घटनाओं की शुरुआत की।

स्यमन्तकोद्धारव्यायोगः - पांच अंक में यह नाटक पुराण या हरिवंश कहानी पर आधारित है। इस नाटक के नाम का अर्थ कृष्ण द्वारा सामंतक मणि का बचाव है। विष्णु के दशावता का वर्णन नाटक के तीन आरंभिक नान्दीश्लोकों में किया गया है। और प्रस्तावना में कृष्ण और सात्यकि के संवाद के माध्यम से दर्शकों को नाटक के संदर्भ के बारे में पता चल रहा है। सूर्य न्याय महामूल्यवान 'स्यमंतक' रत्न घटनाओं के क्रम में ऋक्षराज जाम्बवान के हाथों में आया। जाम्बवान कृष्ण से युद्ध करते हैं। कृष्ण द्वारा जाम्बवान के शिशु पुत्र सुकुमार से 'स्यमंतक' का लाभ और जाम्बवान की पुत्री जाम्बवती से उनका विवाह - यहीं पर नाटक का समापन होता है। नाटककार के श्रेय- समय से पहले वसंत ऋतु का वर्णन, 'ऋक्ष' पर्वत का वर्णन, कृष्ण और "संतक मणि" का उल्लेखनीय वर्णन। भाषा शैली में वीररस का प्रयोग, साथ ही श्रृंगार, रौद्र और हास्यरस का उपयोग गौण रूप में। दृष्टान्त अप्र अस्तुत प्रशंसा और अर्थान्तर न्यास - अलंकार प्रयोग किया गया है। । इस नाटक में संगीत का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। कभी पात्रों की योग्यता दिखाने के लिए, कभी श्रेष्ठ पात्रों का परिचय देने के लिए, देश और काल का परिचय देने के लिए, नाटककार ने संगीत का उपयोग किया है। नृत्य की व्यवस्था भी कम नहीं है।मृदंग के साथ-साथ भक्ति गान गाए जाते हैं।

माणवक-गौरवम् - सात-अंकीय इस नाटक में महाभारत के आदिपर्व आयोधधौम्य मैं कई शिष्यों में से सिर्फ अभिमन्यु अपनी दृष्टि वापस प्राप्त कर ली। माणवक (शिष्य) का गौरवम् (गौरव) अर्थात गुरुभक्ति। नाटक का समापन शिष्यों द्वारा गुरुभक्ति की स्तुति गाते हुए भरतवाक्य की प्रस्तुति के साथ होता है। इस नाटक में संगीत के माध्यम से विभिन्न भावों को अभिव्यक्त किया गया है। कुछ भजन हैं, कुछ भक्ति गीत हैं। लेकिन प्रथमाङ्के उपमन्यु द्वारा गाया संगीत इस नाटक को सार्थक बनाता है। उनके नाटकों में संस्कृत गीत को भाटियाली और कीर्तन के रूप में गाये जाते हैं। कालीपाद तारकाचार्य की नाटक शैली के कारण बीसवीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य को विश्व के दरबार में स्थायी स्थान प्राप्त हुआ।

श्रीजीव न्यायतीर्थ - महामहोपाध्याय पंचानन तर्करत्न के सुयोग्य पुत्र श्रीजीव न्यायतीर्थ का जन्म 26 जनवरी 1893 को उत्तर चौबीस परगना में नैहाटी के अंतर्गत भाटपारा में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा पिता की चतुष्पति, बाद में कलकत्ता संस्कृत कॉलेजिएट स्कूल से दो विषयों में लेटार से प्रवेश लिया। सुरेंद्रनाथ कॉलेज (रिपन) से संस्कृत में बीए, कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक के साथ प्रथम श्रेणी में एमए। फिर उन्होंने वाराणसी में महामहोपाध्याय राखालदास न्यायरत्न को न्यायशास्त्र, काव्य, व्याकरण आदि में योग्यता के साथ सफलता दिलाई। पंडित हरप्रसाद शास्त्री के अधीन शोध किया और अपनी पीएच.डी. प्राप्त की। उन्हें व्याकरण, अलंकार और दर्शन सहित संस्कृत के सभी विषयों का अपार ज्ञान था। उन्हें अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया है। कलकत्ता और वर्धमान विश्वविद्यालय से सन्मानपूर्वक डी. लिट की

उपाधि प्राप्त की। इसके अलावा श्रीजीव को राष्ट्रपति पुरस्कार, प्रयाग विद्वान समाज से 'महामहीमोपाध्याय', हावड़ा पंडित समाज से 'महाकबी', विश्व भारती से 'देशीकोत्तम' और काशी सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय से 'महामहोपाध्याय' जैसी कई उपाधियों से नवाजा गया था। वे भाटपारा संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य थे। कलकत्ता और यादवपुर विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाया। लगभग साठ वर्षों तक उन्होंने सारस्वत साधना की है। 22 अक्टूबर 1992 को उनका निधन हो गया।

श्रीजीव न्यायतीर्थ के नाट्यकृति -

नाटक - नागनिस्तारम्, विवेकानन्दचरितम्, सिन्धुसौवीरसंग्रामम् , रघुवंशम्, महाकविकालिदासम्, साम्यसागरकल्लोलम्, श्रीशङ्कराचार्यवैभवम्, निगमानन्दचरितम्, श्रीकृष्णकौतुकम्, कुमारसम्भवम्

प्रहसन - स्वातन्त्र्यसन्धिक्षणम्, विवाहविड़म्वनम्, चण्डताण्डवम्, भट्टसंकटम्, शतवार्षिकम्, चिपिटकचर्वणम्, वनभोजनम्, दरिद्रदुर्दैवम्, नष्टहासम्, चौरचातुरीयम्, रागविरागम् , पुरुषरमणीयम्, रामनामदातव्यचिकित्सालयम्, क्षुत क्षेमीयम्

भाण - पुरुषपुङ्गावः, विधिविपर्यासम्

प्रकरण - माधुरीसुन्दरम्

व्यायोग - गिरिधरसंवर्धनम्, कैलासनाथविजयम्

नागनिस्तारम् - छह अंक विशिष्ट अद्भुत रस के माध्यम से महाभारत की जनमेजय कहानी को इस नाटक में बताया गया है। यहाँ हमें नारायण की स्तुति, कृष्ण की महिमा और कई गीतों के माध्यम से भविष्य की घटनाओं की शुरुआत मिलती है।

विवेकानन्दचरितम् - पञ्चमाङ्क नाटक स्वामी विवेकानन्द के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित है।

सिन्धुसौवीरसंग्रामम् - यह एक एकाङ्क रूपक है। लेखक ने यह रूपक कश्मीर की समस्या के बारे में लिखा है। भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर पर कब्जे को लेकर विवाद अभी भी जारी है। उसका वर्णन इसमें है। हालांकि नाटक के लिए सिंधुसौवीर यानी भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम की घोषणा कर दी गई है लेकिन यह युद्ध अब भी जारी है।

रघुवंशम् - नाटक में दिलीप से लेकर दशरथ तक की कहानी वर्णित है, रघुर यशोगन गीतों के माध्यम से सुनाया जाता है।

महाकविकालिदासम् - यह पांच अंकों का नाटक है। कालिदास के जीवन पर आधारित इस नाटक की रचना श्रीजीव ने की थी। दशपुर की राजकुमारी विद्यावती से विवाह करने का प्रस्ताव रखने वाले तीन राजकुमारों को राजकुमारी द्वारा प्रत्याख्यान कर दिया जाता है और विद्यावती की शादी एक मूर्ख से करके बदला लेने की प्रतिज्ञा की जाती है। विद्यावती का विवाह कूर्मनाथ उर्फ कालिदास से हुआ। विवाह के बाद, विद्यावती को कूर्मनाथ की पहचान पता चल जाती है और वह उसको घर से बाहर निकाल दिया। कूर्मनाथ कवि कालिदास कैसे बने - यही इस नाटक का विषय है। कालिदास अंत में राजा विक्रमादित्य की मध्यस्थता के माध्यम से विद्यावती के साथ फिर से मिला। यह 20 वीं सदी के श्रेष्ठतम नाटकों में से एक है। छंद और अलंकार का सुन्दर प्रयोग, उत्कृष्ट काव्यात्मक प्रदर्शन। यहां नाट्यशास्त्र के सभी नियमों का पालन किया गाया है।

मुख्य रस श्रृंगार है, गौण रस संभोग और विप्रलंब है। इस नाटक में गीत का प्रयोग अधिक है। उदाहरण के लिए, वैतालिक की गीता में विक्रमादित्य का पराक्रम, सूत्रधार की गीता में शिव, पंचमंक के आरंभ में वनचारी की प्राकृत गीता भगवान की स्तुति में नृत्य दिखाती है।

साम्यसागरकल्लोलम् - यह रूप साठ के दशक के अंत और सत्तर के दशक की शुरुआत में बंगाल की उग्र स्थिति में भ्रमित और भटके हुए युवाओं के लिए मार्गदर्शन वर्णित है।नाटक में इस रूपक को तीन मुखसन्धि में विभाजित किया गया है। इस रूपक का प्रधान रस करुण है और गौण रस व्यंगात्मक हास्य है।

श्रीशङ्कराचार्यवैभवम् - इस नाटक में शंकर के जन्म, बाल्यकाल और उनकी माता द्वारा सन्यास आश्रम में प्रवेश की अनुमति का वर्णन है। इसके अतिरिक्त विदुषक और सूत्रधार के संवाद से संस्कृत का स्थान धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। यह नाटक पाठकों को शंकर की जीवनी, वेदांत ज्ञान और 1960 के दशक में संस्कृत (एक मृत भाषा) की दुर्दशा की याद दिलाता है। यहाँ विदूषक गीत प्रभावशाली है।

निगमानन्दचरितम् - महापुरुष स्वामी निगमानंद सरस्वती के जीवन और शिक्षाओं के आधार पर निगमानंदचरितम् नामक नाटक की रचना की गई।

श्रीकृष्णकौतुकम् - श्रीकृष्णकौतुक नाटक में बंशीबदन, राधा और ललिता के गीतों का वर्णन किया गया है।

कुमारसम्भवम् - यह नाटक कवि कालिदास के महाकाव्य कुमारसंभव के विषय पर आधारित है। यहां पांच अङ्क हैं। नाटक में रङ्गमञ्च और नेपथ्य पर गीतों की समावेश, वसंत ऋतु में कामदेव और रति का अभिवादन और अंत में महादेश के विस्तार के साथ नाटक का अंत होता है।

दरिद्रदुर्दैवम् - श्रीजीव न्यायतीर्थ के उल्लेखनीय प्रहसन में से एक है- 'दारिद्रदुर्दैवम्'। यह प्रहसन 1968 ई. में "संस्कृत साहित्य परिषद" में प्रकाशित हुआ था और ऋषि बंकिमचंद्र महाविद्यालय की देवभाषा परिषद के वार्षिक उत्सव में अभिनीत किया गया था। इस प्रहसन में श्रीजीव महाशय उस समय के समाज में छात्रों के स्वार्थ, गरीबी का दुःख-कष्ट वर्णित हैं। नायक वक्रेश्वर एक गरीब भिखारी ब्राह्मण है। उसकी कलहप्रिया पत्नी मंदोदरी ने हमेशा की तरह वक्रेश्वर को तीव्र-भर्त्सना किया -

"अहो! त्वद् भाग्ययोगेन दुर्भिक्षं न जहाति माम्।"

अर्थात् पति के दोष से मंदोदरी के माथे से अकाल नहीं टलेगा। एक दिन गर्मी में परिवार भीख मांगने जाता था। प्यासे होने पर उन्होंने क्षुद्रराम नाम के एक व्यापारी को सड़क पर जाते देखा और बक्रेश्वर ने उनसे भीख माँगी। व्यापारी भीख न देने पर वक्रेश्वर ने उसे श्राप दिया था कि वह वक्रेश्वर जैसा भिखारी बन जाए। उस समय वक्रेश्वर के परिवार की दुर्दशा को देखकर अन्य एक आदर्श दंपत्ति का आशीर्वाद के लिए एक विचित्र पासा प्रदान किया। उस पासे से वक्रेश्वर को बहुत चावल मिली हैं। ईर्ष्यालु वक्रेश्वर ने सोचा कि इस पाँसे के प्रभाव से अन्य भिखारी दरिद्रता से मुक्त हो जाएँगे, यह सहन नहीं हुआ। तो वह कहते हैं-

"अन्धः कुष्ठी दरिद्रो वा प्रतिवेशी वरं भवेत् ।
समान-धन-गर्वेण स्पर्धमानो हि दुःसह।।"

फिर उसने अपनी पत्नी से पासे को जलाने को कहा। अन्यथा उसके मन में शांति नहीं होगी (अन्यथा न मे शान्तिरस्ति)। प्रहसन की शुरुआत वक्रेश्वर के एकालाप से होती है। लेकिन वक्रेश्वर की बातों ने समाज के लोगों की आत्मकेंद्रितता और

आत्मनिर्भरता को उजागर कर दिया। वक्रेश्वर के माध्यम से नाटककार ने समाज के स्वार्थी चेहरे को सामने लाया है। इसके अलावा, इस प्रहसन में वक्रोक्तिकृतत्व के प्रभाव को लंबोदर षदानन के झगड़े में देखा जा सकता है। प्रहसन की दूसरी प्रस्तावना में, मंच पर अभिनय सुंदर है। साथ ही नाटककार ने सुन्दर मानव समाज की प्रार्थना करते हुए भरतवाक्य में कहा - "देव दयामय शमय पिपासां सुफलय वालकयुगलहृदाशाम्।"

स्वातन्त्र्यसन्धिक्षणम् - इस प्रहसन में नाटककार ने भारत की स्वतंत्रता की पूर्वरुप पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का चित्रण किया है। नाटककार ने प्राच्य संस्कृति, विश्वबंधु, भारतमाता, यतिवर आदि पात्रों के माध्यम से युवा समाज को ब्रिटिश शासक का असली चेहरा दिखाने का प्रयास किया है। इस प्रहसन में नामों के बीच हमें कृष्ण मिश्र के 'प्रबोधचंद्रोदय' की झलक मिलती है। यह एक गंभीर रचना है। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व भेदभाव की नीति प्रयोग करके भारत का विभाजन किस प्रकार किया गया था तथा किस प्रकार हिन्दू-मुसलमानों के बीच भेद पैदा किया गया आदि बातों को लेखक ने इस प्रहसन में उजागर किया है। इसके अलावा, इसमें इस बात का विवरण है कि कैसे एक युवक अंग्रेजी में शिक्षित होने के बाद पश्चिमी संस्कृति का प्रशंसक बन गया। भारत के विभाजन के फलस्वरूप देश में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। उदाहरण के लिए - अकाल, भ्रष्टाचार आदि।

विवाहविड़म्वनम् - यह 1961 में 'संस्कृत प्रतिभा' नामक एक संस्कृत पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। यह एक प्रहसन है। इसमें हंसी की आड़ में समाज की एक सच्ची घटना को उजागर किया गया है। इसके नायक 60 वर्ष के कामुक वृद्ध रतिकांत हैं। तलाक के बाद उनका विवाह चंद्रलेखा नामक युवती से तय हुआ। अंत में कुछ युवकों के विरोध के कारण रतिकांत ने विवाह नहीं किया। इस प्रकार श्रीजीव ने इस प्रहसन में सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग किया है। यहाँ विधवाओं की दशा का वर्णन किया गया है - ' एको भृत्यो विधवा काचन दासी च प्रतिपाल्यन्ते)।

चण्डताण्डवम् - यह दो अङ्क विशिष्ट प्रहसन है। विश्व शांति के लिए 1944 में दिल्ली में आयोजित महायज्ञ के अवसर पर स्वामी करपात्रीजी की तत्त्वावधान में इसका मंचन किया गया था। इस रूप को द्वितीय विश्वयुद्ध का भीषण रूप बताया गया है। इसके अलावा हिटलर, मुसोलिनी आदि ऐतिहासिक चरित्रों के साथ लोभ, क्रोध, हिंसा और धर्म जैसी मानवीय प्रवृत्तियों को भी साथ लाया गया है। इस प्रहसन में शांति और प्रेम का संदेश दिया जाता है।

भट्टसंकटम् - यह 5 अंकों का नाटक है। इसका अङ्गीरस हास्य है। यज्ञपरायण ब्राह्मण भट्ट और उनकी पत्नी कामिनी के बीच लगातार झगड़ा होता रहता था। कामिनी बदसूरत थी। कामिनी और भट्ट एक दूसरे को डांटते हैं। तब विराध और बालक नामक दो राक्षसों ने कामिनी का अपहरण कर लिया। परिणामस्वरूप, भट्ट ने राजा से न्याय मांगा। भले ही राजा ने उन्हें 'दारान्तरग्रहणं कर्तव्यम् ' कहा, लेकिन ब्राह्मण ने अपनी धार्मिक पत्नी कामिनी को छुड़ाने का फैसला किया। तब राजा ने विराध और बालक से कहा, तुमने कामिनी का अपहरण क्यों किया? राक्षस ने कहा कि उसने ब्राह्मण का अपहरण कर लिया था ताकि वह यज्ञ न कर सके। तब राजा ने विवाद को इस प्रकार सुलझाया - राक्षस अब यज्ञ में बाधा नहीं डालेंगे और ब्राह्मण अब उचाटन मंत्रोच्चारण नहीं करेंगे। लेखक कहना चाहता है कि अगर कोई किसी के हक में दखल दे तो शांति नहीं आएगी।

शतवार्षिकम् - श्रीजीव ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के अवसर पर लिखा था। इस प्रहसन में लेखक ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा

उत्पादित उत्पादों पर लोगों की अत्यधिक निर्भरता पर व्यंग्य किया है।नाटककार ने वैज्ञानिक मार्त्यमणि की रॉकेट मशीन की मदद से यांत्रिक विज्ञान के दुष्ट प्रयोग द्वारा दुनिया के विनाश का संकेत दिया है।

चिपिटकचर्वणम् - यह प्रहसन एक तांत्रिक द्वारा कंजूस धन-लोभी कपाली के अपहरण के बारे में बताता है। यहां देखा गया कंजूस का प्रफुल्लित करने वाला चित्रण।

वनभोजनम् - यह प्रहसन 1961-1962 में 'प्रणवपारिजात' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। लोगों के प्रति ईर्ष्या और मूर्खता किस प्रकार विनाश की ओर ले जाती है, यही इस नाटक का विषय है। घने जंगल में मुफ्त भोजन प्राप्त करने के बाद नायक स्तुति के साथ भगवान का धन्यवाद करता है।

चौरचातुरीयम् - यह एक प्रहसन है। इसका नायक घाट्टङ्कर नाम का एक चोर है, जो चोरी में निपुण और बहुत चालाक है। कभी वह अंधा, कभी लंगड़ा और कभी नशेरी, या पागल बनकर पुलिस की आंखों में चोरी करता था। बाद में, जब एक संत घट्टङ्कर के घर भिक्षा के लिए आए, तो उनके प्रभाव में घट्टङ्कर ने चोरी छोड़ने की कसम खाई। घट्टङ्कर के माध्यम से श्रीजीव ने कहा कि व्यापारी और राजनेता भी चोर होते है लेकिन पकड़े नहीं जाते। लेकिन अंततः चोर घट्टङ्कर में मानवता प्रकट हुई।

रागविरागम् - इस प्रहसन में जैसा कि नाटककार ने मानव मन पर संगीत के महान प्रभाव को दिखाया है, श्रीजीव न्यायतीर्थ का संगीत का गहन ज्ञान प्रकट होता है। यह एक व्यंग्यात्मक रूपक है। संगीत से घृणा करने वाले राजा के राज्य में यदि कोई संगीत से प्यार करता है या गाता है तो उसे अपराध माना जाता है। अंत में संगीत के प्रभाव से राजा का हृदय परिवर्तन हो जाता है। लेखक इस रूप के संगीत के विरोध पर उपहास करता है -

"सत्यं सङ्गीतमहिमा मां मोहयति।"

पुरुषरमणीयम् - यह 2 अंकों का प्रहसन है। इसकी रचना श्रीजीव ने कुंभकोणम में कांची कामकोटि पीठ में जगतगुरु शंकराचार्य की बंगला की तीर्थयात्रा के अवसर पर की थी। इस प्रहसन में सुबंधु और सोमदत्त नाम के दो युवक अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद आजीविका की तलाश में निकल जाते हैं। तब उन्हें पता चला कि रानी सीमान्तिनी हर विवाहित जोड़े को दान-दक्षिणा देगी। तब सोमदत्त ने स्त्री का वेश बनाकर सीमान्तिनी को धोखा दिया। लेकिन बाद में, सुबंधु को सोमदत्त से शादी करने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि उसने अपना पूर्व रुप वापस नहीं पाया। इस प्रहसन में भगवतभक्ति की महिमा का वर्णन है। धोखे से कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता, इसलिए रानी सीमान्तिनी को धोखा देने के लिए सुबंधु और सोमदत्त को फलभोग करना पाड़ा।

रामनामदातव्यचिकित्सालयम् - क्षीबर का नृत्य-गीत।

क्षुत क्षेमीयम् - यह एक प्रहसन है। यह प्रहसन समाज में अमीर और गरीब के बीच भेदभाव और अमीरों के दुर्व्यवहार के बारे में बात करता है। जब धनी रंगनाथ को पता चलता है कि उसके पास जीने के लिए केवल एक वर्ष है। फिर उसने अपना स्वभाव बदल लिया और लंबी उम्र पा ली। इस प्रहसन में श्रीजीव प्यार करने वालों की बात करते हैं।

पुरुषपुङ्गावः - यह भाण 'संस्कृत साहित्य परिषद' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। एकांक की रचना भाण विश्वनाथ के साहित्य दर्पण लक्षण अनुसार की गई

है। इस भाण में लेखक ने नायक बागबी के चरित्र के माध्यम से पुरुष समाज के एक वर्ग का घोर उपहास किया है। जो दुसरे के पत्नी को बढ़ावा देते हैं और अपनी पत्नियों को परदे के पीछे रखते हैं। वे समाज में तरह-तरह की गतिविधियां करते हैं और समाज को पतन की ओर ले जाते हैं।

विधिविपर्यासम् - 1944 में पूना में आयोजित 'ड्राफ्ट हिंदू कोड' बिल' पर ऐतिहासिक सम्मेलन। उनके बारे में 'विधिविपर्यासम' नामक भाण रचा गया था। श्रीजीव का नाटकीय व्यक्तित्व असाधारण है।

माधुरीसुन्दरम् - दस अंकों का यह प्रकरण 'प्रणवपारिजात' में प्रकाशित हुआ था। यह वीणावादक सुंदरसिंह और राजकुमारी माधुरी की आकर्षक प्रेम कहानी है। कई लोगों के अनुसार यह नाटक मार्गसंगीतकार जादूगर यदुभट्ट के जीवन पर आधारित है।

गिरिधरसंवर्धनम् - यह व्ययोग श्रेणी रूपक है। कृष्ण द्वारा गिरि गोवर्धन धारण करने की कहानी है, यहा का मुख्य रस वीर है। धारावाहिक द्वारा नृत्य-गीत का वातावरण है।

कैलासनाथविजयम् - वीर रसात्माक एकाङ्क विशिष्ट व्ययोग में मुख्य विषय रामायण वर्णित रावण के पर्वत उठाने की कहानी है। महादेव की सन्तुष्टि ही नाटककार का लक्ष्य है।

विश्वेश्वर विद्याभूषण काव्यतीर्थ – 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के महानतम नाटककारों में से एक विश्वेश्वर विद्याभूषण काव्यतीर्थ थे। उनका जन्म 1903 ई. में बांग्लादेश के चटगाँव के खितबचर गाँव में हुआ था। पिता का नाम कृष्णकांत तर्करत्न है। गंगाधर ने काव्यव्याकरणतीर्थ और रजनीकांत तर्कचुडामणि के अधीन अध्ययन किया। बाद में, उन्होंने चटगाँव के संस्कृत कॉलेज में अध्ययन किया और कवितीर्थ बन गए। उन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाई की, लेकिन स्वदेशी आंदोलन के दौरान उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा छोड़ दी और टोले में संस्कृत का अध्ययन किया। उनका कर्मजीवन चटगाँव के संस्कृत कॉलेज में अध्यापन से शुरू हुआ। बाद में अंग्रेजी स्कूल में भी पढ़ाया। लेकिन विभाजन के परिणामस्वरूप, उन्होंने बांग्लादेश छोड़ दिया और उत्तरी चौबीस परगना के बारासात में स्थायी रूप से रहने लगे। अध्यापन के साथ-साथ, वे बांग्लादेश और बंगाल के बाहर विभिन्न संस्कृत पत्रिकाओं से जुड़े रहे और उन पत्रिकाओं में कई संस्कृत रचनाएँ प्रकाशित कीं। 1985 में उनका निधन हो गया।

विश्वेश्वर विद्याभूषण काव्यतीर्थ के नाट्यकृति -

रामकथा पर आश्रय करके लिखा - 'राजर्षिमरतम्', 'उत्तरकुरुक्षेत्रम् ', 'भारतमेलनम् '।

उन्होंने वाल्मीकि को अनुसरण करके लिखा - 'वाल्मीकिसम्वर्द्धनम् ', 'दस्युरत्नाकरम् '।

उन्होंने चाणक के जीवन पर आधारित नाटक लिखे - 'चाणक्य विजयम् ' ।

राष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित नाटककार - 'प्रबुद्ध हिमालयम्', 'शाश्वतभारतम्'।

पौराणिक कथाओं पर नाटक लिखे- 'उमातपस्विनी', 'द्वारावती', विष्णुमाया आदि नाटक।

प्रबुद्ध हिमालयम् - 7 अंक इस नाटक में एक नया विषय है और राज्य प्रेम और समृद्धि की कहानी पाठकों और दर्शकों को रोमांचित करती है। हालांकि Birth बहुत अच्छा नहीं था। नाटक राष्ट्रीय प्रेम से जुड़े संगीत के साथ नायक का मनोरंजन करने के लिए संगीत का उपयोग करता है। द्वितीयाङ्क में नायक विक्रमवर्धन के मनोरंजन के लिए मदन्तिका नामक गायिका ने अन्य गायिकाओं के साथ मिलकर गीत गाया।। फिर राजा ने जनता में राष्ट्रीय प्रेम जगाने के लिए गीत गाए हैं। पञ्चमाङ्के राष्ट्र की कन्याओं ने युवाओं को प्रोत्साहित करने के

लिए कई गीत गाए। देशभक्तिपूर्ण नान्दी का अंतिम भाग है –

"वन्दे भारतमात्रृकां सुवरदां गङ्गासरिन्मालिनीम्।"

प्रथमाङ्के - राष्ट्रप्रधान विक्रम वर्धन ने राज्य की जनता से कहा - पूरा राज्य एक राष्ट्र बनेगा।
द्वितीयाङ्के - चंद्रशासन (सेनापति) ने सैनिकों को देवस्थान पर आक्रमण करने का आदेश दिया।
तृतीयाङ्के - विजयकेतु के डाकुओं से मधुछन्दादिगन्धर्वकुमारियों का उद्धार।
चतुर्थाङ्के - राजकवि सुधाकंठ का वीणाबदन।
पञ्चमाङ्के - विक्रमवर्धन की सेना ने अरुणाचल प्रदेश पर आक्रमण किया।
षष्ठाङ्के - ब्रह्मानंद का सनातन को संदेश।
सप्तमाङ्के - सनातन योग साधना में उन्होंने महासमाधि प्राप्त की।

चाणक्य विजयम् - विश्वेश्वर विद्याभूषण का एक अन्य प्रसिद्ध नाटक सात अङ्कों में 'चाणक्यविजयम्' है। इस नाटक का मुख्य विषय चाणक्य द्वारा कूटनीतिक चालों द्वारा नंद वंश का विनाश, मौर्य वंश की स्थापना और चंद्रगुप्त का राज्याभिषेक है। नन्दी श्लोक में भारत माता का वंदन, प्रस्तावना में सूत्रधार और आसपास के संवादों में संस्कृत की स्तुति उल्लेखनीय है। इस नाटक की विशेषता कौमुदी महोत्सव के अवसर पर नृत्य-गीतों की व्यवस्था है। प्रथमाङ्क में गायन कन्या का चाणक्यगृह में आगमन और नाटक में अन्यत्र कई गीतों का प्रयोग, द्वितीयाङ्क में रानी विलासवती का वीणावादन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विश्वेश्वर का देशभक्ति गीत दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'संस्कृत प्रतिभा' में राष्ट्रगान के रूप में प्रकाशित हुआ था। करुणरस के वाद्य संगीत के प्रयोग ने नाटक को और अधिक सुंदर बना दिया है। विश्वेश्वर चरित्र चित्रण जैसे किया नन्द के मंत्री गुणसिंधु, चंद्रगुप्त, मुरा, कौंडिन्य। नाटककार की भाषा सरल, सहज है तथा सुन्दर उपमाओं का प्रयोग नाटक को सार्थक बनाता है। इस नाटक के प्रथमांक के प्रथम दृश्य में लड़कियों का संगीत प्रभावशाली है -

"मनोमन्दिरे विराज से मनोहर... याचे ते पुण्यप्रेम, अस्य जय।"

उत्तरकुरुक्षेत्रम् - 5 अङ्क विशिष्ट यह नाटक कुरुक्षेत्र के युद्ध में पांडवों की जीत के बाद कृष्ण के साथ एक साक्षात्कार के बारे में है। इस नाटक में वीर-हास्य-भयाणकादि रस का समावेश है। आधुनिक छन्द का प्रयोग यहाँ ध्यान देने योग्य है।

दस्युरत्नाकरम् - दस्युरत्नाकर वाल्मीकि संवर्धन का लघु रूप है। पिता विश्वेश्वर ने पुत्र धनेश नारायण चक्रवर्ती के साथ नाटक का प्रकाशन किया। श्रीरामचंद्र पर संगीत इस नाटक का एक दिलचस्प पहलू है। दस्यु रत्नाकर के चरित्र का विकास इस नाटक का मूलसार है। भक्ति भाव से भरा है।

वाल्मीकिसम्बर्धनम् - द्वादशाङ्क विशिष्ट 'वाल्मीकिसंबंधनम्' नाटक में रत्नाकर के जीवन की उत्थान कथा बताई गई है। यहाँ सरस्वती नारद द्वारा रामकथागान गाने की आज्ञा के विषय पर आलोचना किया गया है।बनालक्षी सुनंदा और माधवीर की नृत्य-गीत दर्शकों का मनरञ्जन किया है।

डॉ रमा चौधरी - डॉ. रमा चौधरी ने अपने पति यतीन्द्रविमल चौधरी के साथ कई संस्कृत नाटकों का निर्माण किया। वह भारत के प्रतिष्ठित और में सबसे आगे हैं। उनकी मेहनत, कला और उदारता पर भारत को गर्व है। वे बांग्लादेश में मैमनसिंह के अधीन जयसिद्धि में रहते थे। लेकिन इनका जन्म 8 फरवरी 1911 ई. को हुआ था कलकत्ता में। रमा देवी के पिता बैरिस्टर सुधांशु मोहन बोस हैं, ठाकुर भारत के पहले बंगाली गणितज्ञ आनंदमोहन बोस हैं। रमा

देवी ने 1927 में ब्रह्म गर्ल्स स्कूल से लड़कियों में प्रथम, स्कॉटिश चर्च कॉलेज से दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी में प्रथम, बी.ए. किया। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम.ए. किया, और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी.फिल करने वाली पहली बंगाली महिला बनीं। स्वामी यतीन्द्रविमल चौधरी के साथ मिलकर 'प्रच्यवाणी' की स्थापना की और पत्रिका के माध्यम से संस्कृत का प्रचार-प्रसार किया, अभिनय किया, संगीत रचा। वह अखिल भारतीय ललित कला संघ की संस्थापक और अध्यक्ष थीं। महान लेखिका का 1991 में निधन हो गया।

डॉ रमा चौधरी की नाट्यकृति -

शङ्करशङ्करम्, अभेदानन्दम्, देशदीपम्, नगरनूपुरम्, पल्लीकमलम्, संसारमृतम्, मेघमेदुरमेदीनियम्, भारतपथिकम्, अग्निवीणानाटकम्, कविकुलकोकिलम्, निवेदितानिवेदितम्, भारतचार्यम्, यतीन्द्रयतीन्द्रम्, युगजीवनम्, भारततातम्, रसमयरासमणिः, कविकुलकमलम्, रामचरितमानसम्, चैतन्यचैतन्यम्, गणदेवतानाटकम्, प्रसन्नप्रसादम् ।

शङ्करशङ्करम् - प्रसिद्ध अद्वैत वेदांतवादी शंकराचार्य के जीवन और दर्शन पर आधारित। चौदह दृश्यों में रचित। शंकराचार्य ने पूरे भारत की यात्रा की और वेदांत का वाणी प्रचार किया। इस नाटक में शंकर के जीवन की विभिन्न घटनाओं की चर्चा की गई है। इस नाटक में शंकर के ईश्वर प्रेम का वर्णन किया गया है। इस नाटक में शंकराचार्य द्वारा रचित मन्त्रों का उल्लेख मिलता है। भाषा की माधुर्य भी लाजवाब है।

अभेदानन्दम् - स्वामी रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य स्वामी अभेदानन्द की जीवनी यहाँ वर्णित है। स्वामी अभेदानन्द रामकृष्ण ने वेदांत मठ की स्थापना की थी। उसकी जिंदगी की इस नाटक में पवित्रता, समर्पण और चमत्कारों का वर्णन किया गया है। उनके नैतिक और दार्शनिक विचार उत्साहवर्धक हैं।

देशदीपम् - इसमें मातृभूमि के लिए मर मिटने वाले देश के सभी वीरों की जीवन कथाओं का वर्णन है। साथ ही ग्रामीण परिवेश के विभिन्न चित्र भी खींचे गए हैं।

पल्लीकमलम् - नौ दृश्यों में लिखा गया है। लेखक ने एक गाँव की लड़की पर आधारित नाटक की रचना की है। गाँव की लड़की कमलकालिका ने नायक रूपकुमार से शादी की। नाटक पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति में है। नाटक हास्यरसात्मक दर्शकों का मनोरंजन करती है।

संसारमृतम् - सात दृश्यों में लिखा गया है। इस नाटक में गरीब केली परिवार की दःखपरिस्थिति का वर्णन किया गया है। यह आधुनिक जीवन पर आधारित नाटक है।

मेघमेदुरमेदीनियम् - नौ दृश्यों में रचित। कालिदास के मेघदूत का वर्णन किया गया है।उन्होंने यक्ष-यक्षी के अतीत और अभिशाप मुक्त जीवन की एक काल्पनिक कहानी संकलित की है। यह उज्जैन में कालिदास जयंती पर किया गया था।

भारतपथिकम् - राजा राममोहन राय के जीवन की कहानी पांच दृश्यों में वर्णित है। राममोहन का जन्म 10 मई, 1774 को हुगली के राधानगर गांव में हुआ था। पिता का नाम रमाकांत राय है। वह संस्कृत, अरबी, फारसी, ग्रीक, अंग्रेजी, लैटिन आदि विभिन्न भाषाओं में निपुण थे। 1827 में, उन्होंने ब्रह्म धर्म और ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने सतीदाह प्रथा का विरोध किया। परिणामस्वरूप, तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड बेंटिंक द्वारा इसे बंद कर दिया गया था। उन्होंने समाज के विभिन्न अंधविश्वासों के खिलाफ मुखर भूमिका निभाई। वह 1830 में विदेश गए और 1833 में ब्रिस्टल में बीमारी से उनकी मृत्यु हो गई। इस नाटक में बहुविवाह, जातिगत

भेदभाव, सती-बलिदान आदि के विरोध का वर्णन किया गया है।

अग्निवीणानाटकम् - कवि काजी नजरूल इस्लाम के जीवन पर आधारित इस नाटक को लिखा गया।

कविकुलकोकिलम् - महाकबी कालिदास के प्रारंभिक जीवन का वर्णन लेखिका ने अलग ढंग से किया है। बचपन से ही उन्हें प्रकृति का बच्चा और औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के अनिच्छुक के रूप में वर्णित किया गया है। यद्यपि बाद में वे महाकबी के आसन पर स्थापित हुए। यह नाटक उज्जैन के कालिदास समारोह में किया गया था।

निवेदितानिवेदितम् - डॉ. रमा चौधरी के उल्लेखनीय नाटकों में से एक 'निवेदित-निवेदितम्' है, जो सिस्टर निवेदिता की जीवनी पर आधारित है, जिसमें बारह दृश्य हैं। नाटक के नान्दी श्लोक में, रुद्राक्ष की माला पहनने वाले, विवेकानंद के प्रिय शिष्य पुण्यकीर्ति निवेदिता की पहचान और प्रशंसा की जाती है। नाटकीय परंपराओं के अनुसार, निवेदिता के चरित्र की चर्चा 'प्रस्तावना' खंड में सूत्रधार और नटी के बीच एक संवाद के माध्यम से की जाती है। नाटक के पहले दृश्य में, मार्गरेट 1895 में लंदन के वेस्ट एंड में लेडी इसाबेल मार्गसन के ड्राइंग रूम में स्वमी विवेकानन्द से साक्षात् और उस पर एक गहरा विश्वास विकसित करता है।द्वितीय दृश्ये घरेलू धर्म पर 1896 में लंदन में विवेकानंद के भाषण ने मार्गरेट को प्रेरित किया। तीसरे दृश्य में, मार्गरेट स्वामीजी के लंदन निवास पर उन्हें अपने गुरु के रूप में स्वीकार करती है। चौथे दृश्य में, 1896 में मार्गरेट के भारत आने का आह्वान और एक संयोजन। पांचवें दृश्य में, बागबाजार, उत्तरी कलकत्ता में श्री श्री सारदा देवी की तीन विदेशी बेटियां, मार्गरेट, मिस मैकलियोड और मिसेस ओलीबुल के साथ प्रसाद ग्रहण करती हैं। छठे दृश्य में, मार्गरेट को विवेकानंद द्वारा दीक्षा दी जाती है। अगले छह दृश्य निवेदिता की लोक सेवा हैं और अंतिम दृश्य 13 अक्टूबर 1911 को निवेदिता की महासमाधि है। रमा चौधरी ने इस नाटक में मुख्य और छोटे पात्रों को खूबसूरती से चित्रित किया है। वीर, करुण और शांतरसे। नाटक ने दर्शकों का दिल जीत लिया।

भारतचार्यम् - यह नाटक बारह दृश्यों में श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन और योगदान पर आधारित है। यह उनके निर्देश पर 1966 में राष्ट्रपति भवन में प्रदर्शित किया गया था और सम्मानित किया गया था। वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति थे।

यतीन्द्रयतीन्द्रम् - लेखिका ने नाटक में अपने पति यतीन्द्रविमल चौधरी के जीवन और कार्यों को उपस्थित किया है। संस्कृत नाटक में यतीन्द्रविमल चौधरी के योगदान पर प्रकाश डाला है।

युगजीवनम् - यह नाटक श्रीरामकृष्ण के दिव्य जीवन की कहानी पर लिखा गया है। इस नाटक में दस दृश्य हैं। लेखिका ने इस नाटक में श्रीरामकृष्ण के संपूर्ण जीवन को सरल और धाराप्रवाह तरीके से उपस्थापन किया है।

भारततातम् - यहां छह दृश्यों में महात्मा गांधी की जीवनकथा की चर्चा की गई है। इस नाटक में महात्मा गांधी के साम्प्रदायिक एकता के संघर्ष और हरिजनों के प्रति प्रेम आदि का वर्णन किया गया है।

रसमयरासमणिः - रानी रसमणि बंगाल की एक आदर्श महिला थीं। उनका जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था लेकिन उनकी शादी कलकत्ता के एक अमीर परिवार में हुई थी। वह अत्यंत सुंदर और अत्यंत बुद्धिमान थी। अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने बड़ी संपत्ति को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। इस दौरान कई बार अंग्रेजी सरकार से संघर्ष भी हुए, लेकिन उन्होंने उनसे कुशलता से निपटा। उन्होंने दक्षिणेश्वर

में कालीमंदिर की स्थापना की। इस नाटक में लेखिका ने रानी रासमणि की दूरदर्शिता और उनकी कुशाग्र बुद्धि आदि का चित्रण किया है।

कविकुलकमलम् - इस नाटक में कालिदास के जीवन के अंतिम भाग का वर्णन किया गया है। यह नाटक 1970 में प्रच्यवाणी से प्रकाशित हुआ था।

रामचरितमानसम् - रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास पर लिखित। तुलसीदास का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम गहरा है। लेखिका द्वारा तुलसीदास की कविताओं का संस्कृत में अनुवाद।

चैतन्यचैतन्यम् - इस नाटक में महाप्रभु चैतन्य अपने स्वरूप सहित उपस्थित हैं और उनके जीवन की भक्तिमयी बातें जगह-जगह फैली हुई हैं। नाटक में भगवान कृष्ण के लिए आत्म-त्याग, बचपन आदि का वर्णन किया गया है।

गणदेवतानाटकम् - यह नाटक प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के जीवन पर आधारित है।

प्रसन्नप्रसादम् - इहा दस दृश्यों है। इस नाटक में श्रीरामप्रसाद के चमत्कार गीत के अनुभव का वर्णन किया गया है।

नित्यानन्द स्मृतितीर्थ - नित्यानंद स्मृतितीर्थ 1923 ई. 10 अप्रैल को बांग्लादेश के यशोर जिले के सरूलिया गांव में जन्म हुआ। लेकिन बाद में वे हावड़ा जिले में रहने लगे। पिता रामगोपाल मुखोपाध्याय संस्कृत के अध्यापक हैं और कोरारबगान चतुष्पति में पढ़ाते थे। नित्यानंद की माता का नाम दिनतारिणी देवी था। कोरारबगान चतुष्पति को बाद में रामगोपाल चतुष्पति के नाम से जाना जाने लगा। यहीं पर पिताजी से नित्यानंद ने काव्य, व्याकरण, पुराण, न्याय, नवस्मृति, प्राचीन स्मृति की परीक्षा उत्तीर्ण की और षडतीर्थ बन गए। नित्यानंद महाशय 1956 ई. नवद्वीप टोल में व्याकरण के अध्यापक थे। 1956 में, वे कलकत्ता संस्कृत कॉलेज में व्याकरण के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए। अध्यापन के साथ-साथ वे संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए 'बङ्गीय शिक्षा परिषद' के संचालक बने। बाद में, वह उस संस्थान की हावड़ा जिला परीक्षा के सचिव बने। वे फिर से 'हावड़ा संस्कृत समाज' के कर्णधार, ठाकुर सीतारामदास ओंकार नाथ के नेता और संस्कृत पठन प्रणाली से जुड़े थे। 1996 ई उन्हें अपनी संस्कृत विद्वता के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। 2008 ई 4 अगस्त को इस महापंडित का निधन हो गया।

नित्यानन्द स्मृतितीर्थ के नाट्यकृति -

नित्यानन्द स्मृतितीर्थ 100 से ज्यादा नाटक लिखे। अमरवीरवृत्तान्तम् (1968), मेघदूतम् (1962), प्रह्लाद विनोदनम्, सीतारामाविर्भावम्, तपोवैभवम्, सुभाषविजयम् (1986), वालेश्वर महायुद्धम् (1988), आत्मनिवेदनम्, सुशील-विजयम्, देशशत्रुनिपातनम्, वङ्गकीर्ति-विधानम् (1978), कौलिन्य-परिरक्षणम् (1988), मातृहननम् (1987), जननीश्राद्ववासरम् (1987),महिषासुर-लाञ्छनम्, गुप्तधनम्, सम्पत्ति समर्पणम् (1982), देशवन्धु-प्रकीर्तनम्, श्रीव्योपदेववन्दनम्, विद्यासागरवन्दनम्, सिद्धसीतारामम्, तैलङ्गवन्दनम्, भक्तहरिदासम्।

अमरवीरवृत्तान्तम् - भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर लिखा गया यह नाटक वीर सैनिक खुदीराम के बलिदान और शौर्य के बारे में है। किंग्सफोर्ड की हत्या में गलती से मिसेस कैनेडी और उनकी बेटी की मौत के मुकदमा में खुदीराम का मुस्कुराता हुआ मौत का दृश्य। इस नाटक की प्रथमाङ्क प्रथम दृश्य में सरस्वती वंदना, सूत्रधार और उसके आसपास के लोग खुदीराम की बात करते हैं, द्वितीय दृश्य में खुदीराम का प्रवेश होता है।द्वितीयाङ्क के प्रथम दृश्य में भारतीयों के बारे में कर्जन और किंग्सफोर्ड के घृणास्पद भाषण, अरबिंदो

घोष के प्रश्न के उत्तर में देशभक्ति के लिए मर मिटने की खुदीराम की प्रतिज्ञा।

सुभाषविजयम् - सुभाषविजय नाटक में नेताजी सुभाषचन्द्र की वीरता का वर्णन है।

देशवन्धु-प्रकीर्तनम् - देशवन्धु-प्रकीर्तन नाटक में देशबंधु चितरंजन दास के व्यक्तिगत जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है।

देशशत्रुनिपातनम् - देशशत्रुनिपातन नाटक में गद्दार नरेश गोसाई की हत्या की कहानी।

वालेश्वर महायुद्धम् - वालेश्वर महायुद्ध नाटक में बालासोर में बुरीबलम के तट पर टैगगार्ट की लड़ाई की यतीन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघयतीन) की कहानी।

आत्मनिवेदनम् - आत्मनिवेदन नाटक में प्रफुल्ल चाकी की देश के लिए आत्महत्या की कहानी।

सुशील-विजयम् - सुशील-विजय नाटक में श्रीहट्ट सुशील चंद्र सेन के आत्म बलिदान के बारे में है।

वङ्गकीर्ति-विधानम् - वङ्गकीर्ति-विधान इस पञ्चमाङ्क नाटक में बंगाल प्रसिद्ध चिकित्सक और कुशल राजनीतिज्ञ बिधानचंद्र राय की जीवनी पर चर्चा की गई है। प्रथमाङ्क पर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के आमंत्रण पर बिधान चंद्र की देश वापसी,द्वितीयाङ्क पर विधान चंद्र की राज्यपाल और केंद्रीय मंत्री पद की अस्वीकृति,तृतीयाङ्क से पञ्चमाङ्क में बिधान चंद्र की कर्म कौशल और चिकित्सा प्रतिष्ठा को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से दर्शाया गया है। लेकिन पञ्चमाङ्क के अंतिम दृश्य का अत्यंत दयनीय चित्रण सभी को उदास कर देता है। 1 जुलाई, 1962 को बिधान चंद्र का 80 वां जन्मदिन उनके मृत्यु दिवस में बदल गया, जिसने सभी भारतीयों को दुखी कर दिया। विधानचंद्र की देशभक्ति के बारे में नाटककार कहते हैं-

"जननी वरपुत्रो यः सकलेऽस्मिन् महीतले।
जननीं परिहारायात्र कथं वा स्थातुर्महति।।"

भारतवाक्य में नाटककार विश्व शांति की माँग करते हुए नाटक का अंत करता है।

महिषासुर-लाञ्छनम् - महिषासुर-लाञ्छन नाटक चतुर्थ अङ्क है। कालिका पुराण की कहानी पर आधारित नाटक में, महिषासुर ने देवी की कड़ी तपस्या की और देवी संतुष्ट होकर दर्शन दिया। बाद में जब महिषासुर ने देवताओं पर अत्याचार किया तो सभी देवताओं के आह्वान पर देवी महाशक्ति प्रकट हुईं। महिषासुर को हराने के बाद महाशक्तिरूपिणी देवी दुर्गा प्रकट हुईं और उन्होंने महिषासुर को आशीर्वाद दिया।

मातृहननम् - संस्कृत प्रेमी पंडित नित्यानंद ने संस्कृत को 'माता' कहकर सम्बोधित किया, उस माता के विनाश से व्यथित होकर नेताओं पर जमकर बरसे - 'मातृहणम' नाटक में। यह एक पाञ्चमाङ्क विद्रूपात्मक नाटक है।

जननीश्राद्ववासरम् - जब सरकार लोगों को दिखाने के लिए विद्वानों के वार्षिक भत्ते की व्यवस्था करती है, तो नाटककार ने लिखा- 'जननी-श्रद्धावासराम'। संस्कृतन्याय माँ की मृत्यु होने पर नीति-भ्रष्टाचार सरकार के लिए नाटककार का भाषण है -माता के श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन दिया जाता और ब्राह्मण भोजन के बाद ब्राह्मणों को दक्षिणा दिया जाता है, इसलिए सरकार संस्कृत माता की नाश करके उन्होंने विद्वानों के लिए एक छोटे से वार्षिक भत्ते की व्यवस्था की।

कौलिन्य-परिरक्षणम् - स्मृतिशास्त्रों के अध्यापक होने के बावजूद पंडित नित्यानंद ने 'कौलीन्य-परिक्षणम्' नामक चतुर्थाङ्क नाटक के माध्यम से प्राचीन भारत की कौलीन्य प्रणाली के खिलाफ विद्रोह किया। पिता कृष्णदास अपनी लाडली नौ साल की बेटी को बयासी साल के मदन को नहीं सौंपना चाहते। फलस्वरूप कृष्णदास को समाजवादियों का अत्याचार सहना पड़ा। अंत में ग्रामीणों के प्रयास विफल हो जाते हैं और नायक कृष्णदास अपने वचन पर अडिग रहता है। नाटक का समापन शुभ भारतवाक्य के साथ होता है।

विष्णुपद भट्टाचार्य - प्रख्यात शिक्षाविद और संस्कृत-नाटककार बिष्णुपद भट्टाचार्य का जन्म 1907 में अमतली में हुआ था, जो अब बांग्लादेश के फरीदपुर में है। पिता का नाम हरिचरण विद्यारत्न, माता का नाम दक्षिणा सुंदरी है। बाद में वे बागबाजार, कोलकाता में बस गए। बिष्णुपद ने कासिमबाजार पॉलिटेक्निक स्कूल से मैट्रिक, विद्यासागर कॉलेज से संस्कृत में ऑनर्स के साथ बीए, कलकत्ता विश्वविद्यालय से ऑनर्स के साथ संस्कृत में एमए किया। 1930 में 'कवितीर्थ' बने। 1952-1957 तक वे संस्कृत साहित्य परिषद के संपादकों में से एक रहे और उस संस्था द्वारा आयोजित नाटक से जुड़े रहे और अभिनय भी किया। 1969 ई. उसका निधन हो गया।

विष्णुपद भट्टाचार्य के नाट्यकृति -

काञ्चन-कुञ्चिकम् (1959), कपालकुन्डला(1959), अनुकूल-गलहस्तकम् (1959), धनञ्जय-पुरञ्जयम् (1959)।

अनुकूल-गलहस्तकम् - विष्णुपाद भट्टाचार्य द्वारा दो अङ्क में एक हास्य प्रहसन है। 20वीं शताब्दी में उन्होंने अलंकारशास्त्र के अनुसार तथाकथित प्रहसन को एक नए रूप में प्रस्तुत किया। सूत्रधार और नंदक की बातचीत से पता चलता है कि यह विशुद्ध हंसी है। टेलीफोन (दूरश्रुतयन्त्र) का गलत कनेक्शन नाटककार के शब्दों में, यंत्र कनेक्शन प्रमाद है। इस प्रहसन का विषय है- नायक दिव्येन्दुसुन्दर यामिनीकान्त के घर फोन किया। वह फोन गलती से हीरोइन यामिनी के घर चला जाता है। फोन पर नायक और नायिका के बीच बातचीत चलती रहती है। इस प्रहसन का मुख्य रस 'हास्य' है और अङ्गीरस श्रृंगार है। अलंकार से अर्थान्तर न्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा का प्रयोग, बांला प्रवाद-प्रवचन में संस्कृतायन, सार्थक संस्कृत शब्द का प्रयोग जैसे - परीक्षा प्रमाण पत्र 'परीक्षाफल ज्ञापकं बार्तापत्रम्'। यहां भोजपुरी रामावतार के व्यक्तित्व को मूर्त रूप देने वाले संगीत का स्वाभाविक अनुप्रयोग है। यह एक प्यारी हास्यरसात्मक प्रहसन या नाटक है।

कपालकुन्डला - विष्णुपद भट्टाचार्य के पिता हरिचरण विद्यारत्न द्वारा कपाल-कुंडल के संस्कृत अनुवाद को विष्णुपद ने नाट्य रूप दिया। नाटक सात अंकों का है। लेकिन बात करने के लिए बहुत कुछ है। ऐसी है अभिनेताओं की कमी। नाटककार ने दर्शकों के मनोरंजन के लिए इस नाटक में संगीत का समावेश किया है।

काञ्चन-कुञ्चिकम् - कंचन-कुंचिक नामक एक उल्लेखनीय नाटक में बेरोजगार युवक और बेइज्जत बेटे की समस्या को विस्तार से वर्णन है। इस नाटक के कई स्थानों पर राम्य गीत की सभा होती है।

धनञ्जय-पुरञ्जयम् - यह सामाजिक नाटक है। यहाँ बेरोजगारी की समस्या का चित्रण किया गया है। विष्णुपाद अपने नाटकों में पौराणिक कथा को सार्थक रूप दे सकते हैं। लेकिन उन्हें 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में एक नाटककार के रूप में ख्याति मिली।

सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय - सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय का जन्म 27 फरवरी, 1918 को बांग्लादेश के यशोर में हुआ था। बाबा शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय पेशे से

संस्कृत के विद्वान और पुजारी थे। मांॅ प्रमदसुंदरी देवी। सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय उर्फ बुड़ोदा एक नाटककार, कवि, नाटककार और नाटककार थे। पूर्वी और पश्चिमी नाटक, रंगमंच और नाट्यशास्त्र उनकी प्राथमिक गतिविधियों में शामिल थे। इसलिए, नाटक, नाट्यकला और नाटकीयता के बारे में उनके प्रत्येक कार्य में मौलिकता हमेशा देखी जा सकती है। उनके कई निबंधों में से एक है "The Theory of Alienation Effect and Sanskrit Dramaturgy" । उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "Essay of Siddheswar Chattopadhyay" (1993) है। सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय प्रथम व्रेश्ट् बांला या भारतवर्ष की मंच में उपस्थित किया। 'व्रेश्ट्-ग्यालारी' में सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। 'स्वर्णकलसम्' पुरस्कार मिला ।

डॉ सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय ने वर्धमान विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के बाद के सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'गैलीलियो' नाटक का निर्देशन, प्रबंधन और कार्डिनल की भूमिका भी निभाई है।

सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय के नाट्यकृति -

धरत्री-पति-निर्वाचनम् (1971), अथकिम् (1974), स्वर्गीय-हसनम् (1977), नानाविताड़नम् (1974)।

धरत्री-पति-निर्वाचनम् - अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक मुद्दों पर लिखा गया एक असाधारण नाटक। यह व्यंग्य रूपक 1967 में लिखा गया था। 1971 में, संस्कृत साहित्य परिषद ने इस व्यंग्य नाटक को प्रकाशित किया। नाटक में नौ पुरुष पात्र और एक महिला पात्र हैं, और नायिका धरित्री है। इस नाटक में विश्व राजनीति के जटिल एवं भयानक रूप का परिचय दिया गया है। नाटक के पुरुष पात्रों में नाम अजीब हैं। उदाहरण के लिए - गाड्डोलक, ययुधान, हयङ्गल-धुरंधर। नाटक का प्रसंग स्वयं भगवान हैं जो एक रेस्तरां (पंथशाला) के मालिक हैं। उनके सहायक विश्वकर्मा। धारित्री प्रभु की विवाह योग्य कन्या है। हर कोई सुंदर और धनी धरित्री को अपने कब्जे में लेना चाहता है। धन, शक्ति, रिश्तेदार दादा पहचान वाला कोई। संयुक्त राष्ट्र (UNO) नामक विश्व राजनीतिक संगठन अर्थहीन हो गया है। इसके जरिए दुनिया के ताकतवर देशों की इच्छा को आकार दिया जा रहा है। न्यायनीति, निरपेक्षता , व्यक्तिगत स्वतंत्रता आदि के सिद्धांत आज केवल शब्द हैं। इस दुनिया(नायिका धरित्री) से कोई प्यार नहीं करता। दुनिया के सबसे ताकतवर राजनेता उसे बलपूर्वक अपने कब्जे में लेना चाहते हैं। नए हथियारों से दुनिया का अस्तित्व खतरे में है, पर्यावरण खतरनाक रूप से प्रदूषित है। शांतिपूर्ण देशों के सभी प्रयास विफल रहे। यदि आप नाटक को पढ़ेंगे तो आप समझ सकते हैं कि यह किस पात्र, किस देश की बात कर रहा है। इस नाटक में आनन्द ही नहीं, नाटककार ने श्रोताओं के मन में अनेक प्रश्न खड़े किए, यही नाटक की विशेषता है।

अथकिम् - नाटककार सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय की अद्भुत रस की विचित्र नाटक है। नंदी से लेकर पत्रपत्री के नामकरण तक और भरतवाक्य पर समाप्त - हर जगह लेखक ने असाधारण नवीनता देखी है। नाटक के देवता 'समुद्भट' हैं। नाटक में उनकी स्तुति की गई है। नाटककार का पाश्चात्य प्रभाव प्रतीकात्मक धार्मिक नाटक है। आधुनिक लोकतंत्र, राजनीतिक दलों और चुनाव प्रणाली पर नाटककार का खाली व्यंग्य प्रकट होता है। तथाकथित सामग्री यहां प्रबल नहीं होती है। क, ख, ग, घ, ङ आदि यहाँ एक विशेष वर्ग के प्रतीक के रूप में दर्शाए गए हैं। वे सभी पुरुष पात्र हैं, और 'आ', 'ऊ' आदि महिला पात्रों के रूप में हैं, 'क' शिक्षित मध्यम वर्ग का प्रतीक है, जिसकी वर्तमान भ्रष्ट राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है और राजनीतिक प्रचार से प्रभावित नहीं हो सकता है। . 'ख' निम्न-मध्यम वर्ग का प्रतीक है, जो हाल की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में अपने घरेलू जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। 'ग', 'घ', 'ङ' को विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के रूप में दर्शाया गया है, जो किसी

तरह केवल राजनीतिक सत्ता हासिल करने से संबंधित हैं। इसके लिए वे लोगों से झूठे वादे कर चुनाव जीतने की कोशिश करते हैं। घेराबंदी, हड़ताल आदि के माध्यम से लोगों पर हावी होने का प्रयास। इनमें से कुछ दलों का संसदीय लोकतंत्र में कोई विश्वास नहीं है। वे केवल बल से चुनाव जीतने की कोशिश करते हैं, नाटक का सारांश कहता है-

"कालस्य गतिमालोच्य साम्प्रतं प्रार्थयामहे।
अस्तु मे मङ्गलं नित्यं भवतामस्तु वा न वा।।"

स्वर्गीय-हसनम् - यह एक व्यंग्य नाटक है। नाटककार ने यह नाटक रवींद्रनाथ टैगोर के 'स्वर्गीय प्रहसन' से प्रेरित होकर लिखा था। नाटक के माध्यम से मंत्रियों, सांसदों, राजनीतिक नेताओं के भ्रष्टाचार को पुङ्खानुपुङ्ख से चित्रित किया गया है। उनके अनुसार यह भ्रष्टाचार सभी युगों में रहा है। इसलिए नाटक में सभी युगों के प्रतिनिधियों के नामों का प्रयोग किया जाता है, जैसे - बृहस्पति (देव गुरु), इंद्र (स्वर्ग के देवता), प्राचीन सम्राट अशोक, मध्यकालीन मुगल सम्राट अकबर के नाम। नाटक के अंत में, इंद्र के दोनों ओर 'धुंधा' (किसान) और 'पुंड्रा' (मजदूर) का प्रतिनिधित्व किया जाता है। साम्यवाद की जीत घोषित कर दी गई है। नाटक में 'नान्दी' न होने पर भी वैतालिक का मुख प्रार्थनाओं से भरा है - अमीर-गरीब का भेद मिटाया जाए ताकि जनकल्याणकारी नेता की जीत हो।

नानाविताड़नम् - यह व्यंग्य नाटक 1974 में संस्कृत साहित्य परिषद पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक का विषय 'नाना' (माता) का निष्कासन अर्थात संस्कृत (माता) का निष्कासन है। संस्कृत की उपेक्षा और अनादर के घिनौने कथानक को नाटककार ने उजागर किया है। चरित्र का नाम मुंसियाना है। उत्तरा (हिंदी), पुरवी (बंगाली), विदेशिनी (अंग्रेजी), तीन महिला पात्र, और तीन शैक्षिक अधिकारी और संस्कृत विशेषज्ञ, भकुष्ठ, स्वाकुंभ और वसुकुंभ। नाटककार सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय का संस्कृत के प्रति उनकी मौखिक श्रद्धा और उसके आंतरिक प्रतिकर्षण की रणनीति का मजाकिया व्यंग्य उपयुक्त रूप से प्रकट होता है। इस नाटक की विशेषता यह है कि इसकी गांठ और प्रवर्तक एक ही व्यक्ति हैं। वह प्रत्येक अंक की शुरुआत में आता है और बताता है कि नाटक में क्या होगा। यह स्रोत के शब्दों से शुरू होता है और उसके शब्दों पर समाप्त होता है। बंगाली कहावतें, मुहावरेदार बंगाली शब्दों का संस्कृतीकरण, आसानी से नाटककार द्वारा किया गया। इस नाटक के गीत बहुत प्रभावशाली हैं-

"शृणु शृणु समागत सर्वगुणिजन
अधिकारि गीतेऽधुना दीयतां हि मनः...।।"

पंडित दुर्गाप्रसन्न विद्याभूषण - पंडित दुर्गाप्रसन्न विद्याभूषण 1971 में संस्कृत साहित्य परिषद पत्रिका (कलकत्ता) में संस्कृत नाटक लिखकर प्रसिद्ध हुए। "एकलव्य गुरुदक्षिणम्" उनके नाटक का प्रतीक है। इस छह अंक वाले नाटक की सामग्री महाभारत की आदिपर्व में वर्णित द्रोणाचार्य और निशानराज हिरण्यधनु के पुत्र एकलव्य की कहानी है। नाटक के प्रारंभ में वेद वेदांग आदि ज्ञात पण्डित भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य के दारिद्र-जीवन देखा जाता है। फलतः उसने शास्त्रों का अध्ययन और अध्यापन त्याग दिया और धन प्राप्ति की आशा में गुरु परशुराम के पास आ गया। लेकिन परशुराम ने अपना सब कुछ ब्राह्मणों को दान कर दिया। केवल शस्त्र हैं और देह अस्त्राणि शरीरञ्च। शस्त्रशरीरयोः कतरदिच्छसीति। अंत में, द्रोण केवल अपने हथियारों के साथ घर लौट आए। द्रोण ने कृपाचार्य की बहन कृपी से विवाह किया और उनसे अश्वत्थामा नाम का एक पुत्र पैदा हुआ। द्रोण के हालत ऐसी है कि वह अपने बेटे को दूध तक नहीं पिला पा रहा है। इसलिए उन्हें अपने मित्र द्रुपदराज के पास जाने के लिए मजबूर होना पड़ा और अपमानित और खाली हाथ घर लौटना पड़ा। अंत में, उन्हें कौरवों और पांडवों के

अस्त्रगुरु के रूप में नियुक्त किया गया। द्रोण गरीबी से पीड़ित थे और बोले-

> "दारिद्रं नाम षष्ठं महापातकम्। मानं नैव लभते पण्डितजनोऽप्यस्मिन् धनाभावतः। "

इस बीच एकलव्य द्रोणाचार्य से शस्त्र सीखने से वंचित रह गया और गुरुद्रोणाचार्य की मूर्ति बनाके स्वयं शस्त्र सीखने लगा। नाटककार ने एकलव्य को एक शांत और एकांतप्रिय तपसमूर्ति में चित्रित किया है। एकलव्य ने गुरुदक्षिणा स्वरूप अपना अंगूठा मुस्कुराते हुए द्रोणाचार्य को दे दिया। पंडित दुर्गाप्रसन्न विद्याभूषण ने एकलव्य के वर्णन में कहा है---न विषादो निषादस्य वृद्धाङ्गुष्ठ प्रदानतः। नाटककार ने मुस्कान के साथ इस दान-एकलव्य को श्रोताओं के लिए महान बनाया है।

पञ्चानन राय – 20 वीं सदी में महाभारत की कहानी 'रुरू प्रमद्वारा' 1935 ई. में संस्कृत में लिखी गई थी। पश्चिम बंगाल के परिव्राजक पंचानन राय नाटक लिखकर प्रसिद्ध हुए। वह ब्रह्म समाज के प्रमुखों में से एक थे और ठाकुर परिवार के करीबी थे। महाभारत की कथा है- विश्वासुर और मेनका मिलन से गर्भ में 'प्रमद्वारा' का जन्म। प्रमति और घृताची के मिलन से 'रुरू' नामक पुत्र का जन्म। प्रमद्वारा और रुरु एक दूसरे से प्यार करते हैं। लेकिन एक दिन जब एक जहरीले सांप के काटने से प्रमद्वारा मरने वाला था, देवताओं के हस्तक्षेप से, रुरु के आधे जीवन में प्रमद्वारा को पुनर्जीवित किया गया और दोनों ने शादी कर ली। यह नाटक 60 वर्ष बाद अर्थात् 1996 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक की अनेक विशेषताएँ हैं।

अवनीशङ्कर भट्टाचार्य – 20 वीं सदी के उत्तरार्ध में, अवनी शंकर भट्टाचार्य ने कलाप-प्रशस्ति (1984) नामक एक एकाङ्की रुपक निर्माण किया। आठ दृश्यों में यह नाटिका पूरी तरह से एक अलग स्वाद का है। कौमार या कलापा व्याकरण के सम्मानित नाटककार अवनीशंकर भट्टाचार्य ने यह नाटक कलकत्ता के निकट आदापीठ में बालकश्रम के छात्रों को सरल कलापा व्याकरण सिखाने और पाणिनि के कठिन व्याकरण से बचकर व्याकरण में महारत हासिल करने के लिए लिखा था। अनुष्टुप छन्द में प्रसाद और माधुर्य की शैली में रचित इस नाटक में बालकों की वाक्-शैली, रस, सन्धि, सूत्रलक्षण, शब्दशक्ति, अभिधा, लक्ष्मण और व्यंजन तीनों को बड़ी सुन्दरता से अभिव्यक्त किया गया है-"कौमार व्याकरणम् अर्गलमुक्तिं द्वारं मन्ये।" इस नाटक की प्रस्तावना में 'अद्यामाता' की स्तुति, वंशस्थविल छन्द में सूर्यस्तुति है। सूत्रधार और नाटी के संवाद के माध्यम से कलाप व्याकरण का क्या अर्थ है, इसकी विशेषताएं आदि का सुंदर चित्रण किया गया है। सूत्रधार नाटक में कहते हैं-

> " आर्ये! अति विस्तारेनालम्।दक्षिणेश्वरे तीर्थक्षेत्रे आद्यापीठे अस्यां विद्योत्साहिनी सभायां, कलापप्रशस्तिनाम्नीं नाटिकामभिनेतुम् आदिष्टोऽस्मि।"

'कौमार बा कलाप' नाम शिवपुर कुमार कार्तिक से लिया गया है। जब सर्वधर्म ने शिव की तपस्या की, तो उनके पुत्र कुमार कार्तिका ने उनके आदेश पर सर्वकर्मा की इच्छा को पूरा करने के लिए उनके वाहन मयूर के कलप या पुच्चरूपा पत्र पर व्याकरण की रचना की। अतः व्याकरण का नाम या तो 'कौमार' या 'कलाप' व्याकरण है। सर्वकर्मा ने उस छोटे से व्याकरण से सातवाहन या शालिवाहन को छह महीने में शिक्षित किया। नतीजतन, राजा और रानी मिले। इस प्राचीन कथा के साथ व्याकरण का मिश्रण 'कलाप-प्रशस्तिः' नाटक अवनी शंकर भट्टाचार्य की एक सार्थक रचना है।

रामनाथ तर्करत्न - रामनाथ तर्करत्न का जन्म 1847 ई. में पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के शांतिपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम कालिदास विद्याबागीश है। रामनाथ संस्कृत काव्य, नाटक,

वेदांत, न्याय, स्मृति शास्त्र के विद्वान थे। उन्होंने 1873 ई. में एशियाटिक सोसाइटी ने लगभग बीस वर्षों तक चार हजार से अधिक प्राचीन दुर्लभ पुस्तकों को पुनः प्राप्त किया और एकत्र किया। इस पंडित का 1910 ई. मृत्यु होती है।
रामनाथ तर्करत्न के नाट्यकृति - प्रभातस्वप्नम् (1905) आदि।

व्रह्मचारिणी वेलादेवी - नाटककार ब्रह्मचारिणी बेलादेवी ने अपने तीन नाटकों में प्राचीन भारत के संतों के महान आदर्शों को चित्रित किया है।
वे एकांकी वाले नाटिका हैं- नचिकेतश्चरितम् (1976), महीयसी गार्गी, वीराड्हम्।

नचिकेतश्चरितम् - एकाड्की रुपक को बेलादेवी ने कठोपनिषद कहानी से लिया। पुराण काहिनी के अनुसार मृत्यु के देवता यमराज को श्रेष्ठ विद्वान के रूप में जाना जाता है। नचिकेता ने कैसे अनंत ज्ञान प्राप्त किया वर्णन है। नचिकेता का व्यवहार उसके चरित्र के इस रूप को प्रकट करता है।

महीयसी गार्गी - नाटककार बेलादेवी ने बृहदारण्यक उपनिषद से कहानी ली। राजा जनक की राजसभा में, वेदविद्या और व्रह्मविद्या सम्पन्न याज्ञवल्क्य ऋषि से एक ब्राह्मणवादी गार्गी के बीच बहस हुई। हालांकि अंत में याज्ञवल्क्य की जीत हुई। लेकिन जब तक मानव समाज है, महान गार्गी को सम्मान के साथ याद किया जाएगा।

वीराड्हम् - बेलादेवी ने महाभारत की कहानी के आधार पर यह एकाड्की रूपक लिखा था। पांडवों ने द्रौपदी के साथ, विराटराज के राज्य में भेष बदल कर शरण ली। नाटक के अंत में, पांडवों की वास्तविक पहचान को दिखाया गया है, जिसमें राजा विराट की बेटी उत्तरा के साथ तीसरे पांडव अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का विवाह भी शामिल है।

इन तीनों नाटकों में ब्रह्मचारिणी बेलादेवी ने उपनिषदों, विभिन्न संस्कृत साहित्यों से उद्धरण लेकर यहाँ जोड़ा है। सरल संस्कृत में रचित इन तीनों नाटकों में संगीत का भरपूर प्रयोग हुआ है। उनका इरादा था कि सभी वर्ग के लोग नाटक के मधुर स्वाद का आनंद ले सकें। ब्रह्मचारिणी ने उस दिशा में सफलता प्राप्त की है।

अर्चनापुरी - श्री अर्चनापुरी माता कोलकाता के यादवपुर स्थित 'श्रीसत्यानन्द महापीठ' के उपदेष्टा मंडल के सदस्यों में से एक हैं। वह श्री सत्यानंद की मानसकन्या हैं। 1928 ई हालाँकि उनका जन्म दिनाजपुर में हुआ था, पंद्रह वर्ष की आयु में उन्हें सत्यानंद ने दीक्षा दी और अपना जीवन संस्कृत की सेवा में समर्पित कर दिया।
नाट्यकृति – कपटसाधुः (1991), उन्मादस्य चिन्ता (1991), कौतुकप्रद परीक्षा (1988)।

कपटसाधुः -कपटसाधु नाटक में, एक बेईमान व्यक्ति को प्रचार मिलता है।
उन्मादस्य चिन्ता - उन्मादस्य चिन्ता नाटक में सत्यानंद के दिव्य विचारों की बात की जाती है।

कौतुकप्रद परीक्षा - सत्यानंद की जीवनी पर आधारित रचित - 'कोटुकप्रद प्रेक्षा' नाटक।

जयश्री नाग - वर्धमान की जयश्री नाग आधुनिक युग में संस्कृत गीतिनाट्य और नाटकों की रचना के लिए प्रसिद्ध हुई।
उनकी नाट्यकृति - आदिकवेरुद्भावनम्, वधिरजामातृ संवादः, मातृवन्दनम्, चौरनिरुपणम् ।
जयश्री नाग के लगभग सभी नाटक या गाथागीत मंच पर प्रदर्शित किए गए हैं।

गौरी धर्मपाल - लेडी ब्रेबॉर्न कॉलेज, कोलकाता में संस्कृत विभाग की प्रोफेसर गौरी धर्मपाल ने संस्कृत में पच्चीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं।

इनमें 'जननी' (नाटक) और 'तड़िद्विरतिः' लघुकथाएँ उल्लेखनीय हैं। गौरी धर्मपाल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि उनके द्वारा लिखा गया नाटक 'जननी' है। यह 1984 में लिखा गया था। नाटक का परिचय बहुत ही सुखद है। हालाँकि 'प्रस्तावना' बांग्ला में है, लेकिन सामग्री का उल्लेख प्रस्तावना के माध्यम से किया गया है। जननी नाटक में जननी के चरित्र के माध्यम से परिवार की माँ, भारत माता और संस्कृत माँ के हृदय की व्यथा को उजागर किया गया है। संसार में माँ के अपमान के समान संस्कृत भाषा का अपमान नाटककार सहन नहीं कर सका। इसके अलावा, गौरी धर्मपाल ने पात्र-पात्रि की भाषा, भाषाई एकता, पूर्व और पश्चिम की एकता, बंगाली कहावतों और कहावतों का संस्कृतिकरण नाटक सर्बगासुनगर नाटक किया है।

आधुनिक संस्कृत नाटक परंपरा के साथ-साथ आधुनिकता को भी दर्शाता है। नाटक में कहीं कहीं भी नान्दी नहीं है, कोई नान्दी पारंपरिकता को खारिज नहीं करता है, और कहीं नान्दी भी भरतवाक्य नहीं है। सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय ने अपने नाटक 'आथ किम्' में किसी भी पात्र का नाम नहीं लिया। आधुनिक संस्कृत नाटक में भी भारतवाक्य के प्रयोग में नवीनता दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त गीतों के प्रयोग में भी नवीनता देखने को मिलती है। गजल, भजन, करुण संगीत, युद्ध गीत आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। संस्कृत नाटककार रामायण, महाभारत, भारतीय इतिहास, राजनीतिक आंदोलनों, पुराणों और संस्कृत साहित्य से विभिन्न सामग्रियों को एकत्रित करके आधुनिक संस्कृत साहित्य को समृद्ध करना जारी रखते हैं। संस्कृत नाटकों की भाषा में बंगाली भङ्गी का प्रयोग भी उल्लेखनीय है। आधुनिक संस्कृत नाटक में विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ,रामकृष्ण,सारदादेवी, भगिनीनिवेदिता, कश्मीर और खालिस्तान की समस्या आदि विषय भी देखे जाते हैं।

सन्दर्भ

1. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास - (7म खण्ड) आचार्य जगन्नाथ पाठक (सम्पा.), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनउ, 2000।
2. अर्वाचीन संस्कृत साहित्यः दशा एवं दिशा - डॉ. मञ्जुलता शर्मा (सम्पा.), परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004।
3. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा - श्री केशव मुसलगाँओकार, वाराणसी।
4. आधुनिक संस्कृत साहित्य के नये भावबोध - डॉ. मञ्जुलता शर्मा, संस्कृत ग्रन्थगार, दिल्ली-अहमदाबाद, 2010।
5. आधुनिक संस्कृत साहित्य (1910-2010) छोटगल्प ओ नाटक - डः ऋता चट्टोपाध्याय,प्रग्रेसिभ पावलिशार्स, कलकाता, 2012।
6. संस्कृत साहित्येः वीसवी शताब्दी - डः राधावल्लभ त्रिपाठी।
7. भारतवर्षे आधुनिकसंस्कृतसाहित्यम्: विहङ्गमदृष्ट्या परिशीलनम् - डः शुभ्रजित् सेन, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता, 2019।
8. संस्कृत काव्यचर्चाय वाङाली सेकाल ओ एकाल - अञ्जलिका मुख्योपाध्याय, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कलिकाता, 2013।
9. सिद्धेश्वर चट्टोपाध्याय(वुड़ोदा) ओ तार रचित अथ किम् - ऋता चट्टोपाध्याय, संस्कृत साहित्य परिषद, कलिकाता, 2006।
10. आधुनिक संस्कृत साहित्य - डः मैत्रैयी कुमारी, ग्रन्थभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2022।
11. आधुनिक संस्कृत साहित्येर संक्षिप्त इतिवृत्त - डः शिप्रा राय, संस्कृत वुक डिपो, कलकाता, 2017।
12. अर्वाचीन(आधुनिक) संस्कृत साहित्येर इतिहास 1801-2020 - वनविहारी घोषाल, पारुल प्रकाशनी प्राइभेट लिमिटेड, कलकाता, आगरतला, 2011।
13. संस्कृत साहित्य परिक्रमा - करुणासिन्धु दास, रत्नावली, कलिकाता, 2006।

14. आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा -डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थान(मानितविश्वविद्यालय), नवदेहली, 2011।
15. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य - डॉ. राजमङ्गल यादव, जे. पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2015 ।
16. महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धांतवागीशेर सारस्वतसाधना - ऋता चट्टोपाध्याय, संस्कृत पुस्तक भण्डार, संस्कृत साहित्य परिषद, कलिकाता, 2013।
17. पण्डित श्रीजीव न्यायतीर्थेर सारस्वतसाधना - डः ऋता चट्टोपाध्याय, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कलिकाता, 1411 (वङ्गाब्द)।
18. Modern Sanskrit Literature Tradition and Innovations: Edited by S.B. Raghunath Acharya.

अन्तर्जाल

1. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog.translate.goog/wiki/Haridas_Siddhanta_Bagish?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
2. https://hi.unionpedia.org/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%B8_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A4_%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%B6
3. https://sanskritbhasi.blogspot.com/2014/05/blog-post_17.html?m=1
4. https://sanskritbhasi.blogspot.com/2015/03/blog-post_27.html